भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 8 | **जुलाई** 2007 | **अंक** 7

पुस्तक की प्रतिष्ठा में

पुस्तकें प्रकाश स्तम्भ हैं
समय के सागर में

वे दिखाती हैं रास्ता
जब हम भटकते हैं
वे देती हैं राहत
जब हम
हारते, थकते हैं
संशय में होते हैं कभी हम
तो पुस्तकें ही देती हैं
विश्वास और आस्था

आदमी जो पढ़ता है किताबें
बुनता है
अपने दिमाग में ताने-बाने
विचारों के गढ़ता है
नए नए प्रारूप...
कौन जाने
कब कौन-सा ख्याल
सँवर जाए और बदल दे
जो सारी दुनिया का स्वरूप

लोग आते हैं और चले जाते हैं
जीते हैं, मरते हैं
पर पुस्तकें अमर हैं
अमूल्य हैं
जैसे मित्रता और जीवन
जैसे विज्ञान और सृजन
बार-बार जी उठती हैं किताबें
हमें देने के लिए एक
नया स्वप्न और दर्शन

समय के सागर में
प्रकाश स्तम्भ हैं—पुस्तकें!

—(डॉ०) सुरेन्द्र वर्मा, इलाहाबाद

काल के विशाल सागर में पुस्तकें दीप स्तम्भ के तुल्य हैं जो भूले-भटके राही को रास्ता दिखाती हैं। **—ई०पी० ह्विपर**

जब आप बोले या लिखें तो शब्दों की रचनात्मक शक्ति को याद रखें।
—विल्फ्रेड पिटरसन

पुस्तकों का प्रचार-प्रसार कैसे हो ?

साहित्यिक कृतियों की समीक्षा साहित्यिक रसिकों द्वारा की जाती है और आलोचना आलोचकों द्वारा, जो अधिकतर विश्वविद्यालयों या महाविद्यालयों के अध्यापक होते हैं, उनमें भी साहित्याध्यापक होते हैं। आलोचना के भी कई प्रकार होते हैं, अपने किसी मित्र या सहयोगी की हुई तो सराहना यदि किसी प्रतिस्पर्धी या विरोधी की हुई तो छिद्रान्वेषण।

आजकल अधिकतर आलोचना ऐसे ही विश्वविद्यालयीय अध्यापकों द्वारा की जाती है जो पोस्टमार्टम अधिक करते हैं, इससे पाठक पठनीय कृतियों के प्रति भी उदासीन हो जाते हैं। आज हिन्दी में वैसे भी पाठकों का अभाव है। ऐसी स्थिति में पुस्तकों के प्रति पाठकों को आकर्षित करने के लिए आलोचकों को पाठक की दृष्टि से समीक्षा करनी चाहिए।

पाश्चात्य देशों में पुस्तक प्रकाशित होने के पूर्व ही पत्र-पत्रिकाओं को पुस्तक की अग्रिम प्रति सुलभ करा दी जाती है, जो पुस्तक की परिचयात्मक समीक्षा प्रकाशित करते हैं। इस तरह पुस्तक पाठकों में चर्चित हो जाती है और इसकी माँग शुरू हो जाती है। विक्रेता भी प्रकाशक को आदेश कर पुस्तक मँगाता है, प्रयास होता है कि पुस्तक सबसे पहले उसके यहाँ आये।

आज देश में प्रतिदिन हिन्दी समाचारपत्र तथा पत्र-पत्रिकाएँ 15 करोड़ पाठकों द्वारा पढ़ी जाती हैं। इन पाठकों की अभिरुचि को परिष्कृत और प्रोत्साहित करने का दायित्व समाचारपत्रों का है। वैश्वीकरण के इस युग में इन समाचारपत्रों के माध्यम से उपभोक्ता मनोरंजन तथा फैशन की सामग्रियों का प्रचार-प्रसार विशेष रूप से होता है, किन्तु बौद्धिक साधनों के प्रचार-प्रसार में उनकी रुचि नहीं होती। किसी समय इन पत्रों के माध्यम से पाठक भाषा सीखते थे, पुस्तकों की जानकारी प्राप्त करते थे। आजादी की लड़ाई में संघर्ष के लिए प्रेरित करते थे।

ब्रिटेन में जे०के० रोलिंग की कल्पनापात्र हैरी पाटर को वहाँ की पत्र-पत्रिकाओं ने इतना प्रचारित किया कि विश्वभर में उसके करोड़ों पाठक हो गये। विश्व भाषाओं में उसका अनुवाद हुआ। भारत में कॉन्वेन्ट स्कूल के छात्रों ने सात-आठ सौ रुपये मूल्य के उनके उपन्यास खरीद कर पढ़े। हिन्दी में भी उनका अनुवाद हुआ। किसी भारतीय लेखक को यह सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ।

देश की संवाद समितियाँ राजनीतिक तथा अपराधिक समाचारों के प्रसारण में विशेष रुचि लेती हैं। क्या वार्ता तथा भाषा समाचार समितियाँ भारत के समस्त भाषा भाषी की समय-समय पर प्रकाशित प्रमुख रचनाओं को प्रचारित-प्रसारित नहीं कर सकतीं? एनसीईआरटी ने अपनी पाठ्य-पुस्तकों को सांस्कृतिक विविधता का झरोखा कहा है। मलयालम, मराठी, गुजराती लोक कथाओं के साथ टेसू राजा बीच बाजार, टेसूरा घंटा बजइबो जैसे लोकगीत हैं। इन पुस्तकों में बहुभाषिकता और सांस्कृतिक बहुलता को दृष्टिगत रखा गया है।

हिन्दी में अखिल भारतीय स्तर के कुछ प्रतिष्ठित पुरस्कार हैं—ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, सरस्वती सम्मान, व्यास सम्मान, शंकर पुरस्कार, उत्तर प्रदेश,

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

मध्य प्रदेश आदि के अनेक पुरस्कार हैं। जिन लेखकों की कृतियों पर ये पुरस्कार मिलते हैं उनकी कृतियों की चर्चा भी नहीं होती, जिससे पाठकों का उनके प्रति ध्यान आकर्षित हो। इन पर पाठकों की प्रतिक्रिया भी आमंत्रित की जाय। तभी इन पुरस्कारों की वास्तविकता और सार्थकता सिद्ध होगी।

प्रत्येक पुस्तक एक इकाई है। किसी भी प्रकाशक के लिए प्रत्येक पुस्तक का प्रचार-प्रसार करना सम्भव नहीं है। पाठकों की इतनी अधिक संख्या होते हुए भी आज सामान्यत: पुस्तकों का एक संस्करण 500 प्रतियों का होता है।

पुस्तक उपभोक्ता सामग्री न होने से प्रत्येक शहर में पाठकों की अभिरुचि की पुस्तकों के विक्रता भी नहीं हैं। डाक-व्यय की अधिकता के कारण दूरस्थ गाँवों, कस्बों में रहने वाले पाठक डाक से भी पुस्तक नहीं मँगा पाते। बढ़ती हुई साक्षरता को देखते हुए यह अपेक्षित है कि लोकतंत्र के लिए देश के नागरिकों को प्रबुद्ध बनाया जाय। यह तभी सम्भव है जब उन्हें शारीरिक विकास के लिए खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराने के साथ मानसिक विकास के लिए अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाय।

पुस्तकों के पठन-पाठन से ही देश में एकता आयेगी, विषमता दूर होगी। ये संवाद समितियाँ सभी भाषाओं के साहित्य प्रकोष्ठ बनायें। ये प्रकोष्ठ देश में प्रकाशित पुस्तकों की चर्चा करें। प्रकाशक उन्हें स्वयं अपने प्रकाशन भेजते रहेंगे। देश के समस्त भाषा भाषियों की संवेदना एक-दूसरे से जुड़ेगी। विभिन्न जातियों में व्याप्त वर्ग संघर्ष दूर होगा। आरक्षण की ज्वाला उसी से शान्त होगी। बौद्धिक दृष्टि से सम्पन्न होने पर सभी में एकता का अहसास होगा, विषमता दूर होगी। हीनता की भावना लोप होगी। आज हिन्दी माध्यम से लोकसेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण कर अनेक लोग आ रहे हैं। हिन्दी भाषा नहीं, देश का संस्कार है, सभ्यता है, संस्कृति है यही देश को उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक जोड़ेगी। देश से निर्यात होने वाले विशाल वेतन-स्पर्धी उद्योग प्रबन्ध-निपुण इस देश का विकास नहीं कर सकेंगे। आम जनता को ही खास बनायें वही इस देश के भाग्य-विधाता बनेंगे।

समाचार पत्रों तथा पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशकों को डाक-व्यय में विशेष रूप से अल्प डाक शुल्क (पोस्टेज) पर पाठकों तक पत्र-पत्रिकाएँ भेजने की सुविधा दी जाती है। क्या देश के प्रमुख प्रकाशकों-विक्रेताओं की पुस्तकों पर डाक-व्यय छूट नहीं दी जा सकती। उनके पंजीकरण के नियम बनायें जिसके आधार पर वास्तविक प्रकाशकों-विक्रेताओं का पंजीकरण कर उन्हें यह सुविधा दी जाय। इससे प्रदेशों के पुस्तकालय प्रकोष्ठ द्वारा अपने पुस्तकालयों को प्रकाशकों से सीधे पुस्तकें भिजवाने में सुविधा होगी। इससे पुस्तकालयों का भी विकास होगा। आज डाक विभाग की प्रतिस्पर्धा कूरियर एजेन्सियों से हो गई है। ऐसे में यह अपेक्षा की जाती है कि कूरियर एजेन्सियों पर अंकुश लगाने के बजाय डाक विभाग को जनोपयोगी बनाया जाय।

तत्कालीन संचार मंत्री रफी अहमद किदवई ने वायुयान द्वारा डाक भेजने की व्यवस्था की थी। आज स्पीड-पोस्ट भी सामान्य डाक-सेवा से पीछे है।

मानव संसाधन विकास मंत्री, संचार मंत्री गम्भीरतापूर्वक विचार करें। लोकतंत्र का आधार शिक्षा है। शिक्षा की माध्यम पुस्तकों को जन-जन तक पहुँचायेंगे तभी मानव संसाधनों का विकास होगा और देश में विकासमान शक्तियों का संचार होगा।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

किताबों की गन्ध मेरे
जिगर में घुल गई
पानी पाकर किशमिश
सी फूल गई।

औरों से मैं कोसों-
मीलों दूर हुआ
जब अपनी आँखों से
नरम शब्दों को छुआ।

मेरे मौन शब्दों की ये
बेहतर परिभाषा है
तनाव, चिन्ता से दूर
इसमें आनन्द, आशा है।

व्यर्थ के शोरगुल से दूर
ये पन्नों में जीवन बिखेरती हैं
मुश्किल दिनों में राहें
किताबों में ही खुलती हैं।

—रविप्रकाश केसरी, वाराणसी

साहित्य का कूड़ा बुहारिये

समय आ गया है, साहित्य में जितना कूड़ा बढ़ता जा रहा है, उसे बुहारिये, इकट्ठा कीजिए और अस्सी पर गंगा में प्रवाहित कीजिए। प्रखर समीक्षक नामवर सिंहजी ने आवाहन किया है—साहित्य में बहुत कूड़ा फैलता जा रहा है, यह चिन्ता का विषय है। भारतेन्दु ने भी कहा था—

मैली गली भारी कतवारन सड़ी चमारिन पासी।
देखी तुमरी कासी भैया देखी तुमरी कासी॥

तुलसीदास ने अस्सी से साहित्य सृजन आरम्भ किया था। उन्होंने भी कुछ ऐसा लिखा जिससे उन्हें पीड़ा झेलनी पड़ी। पीड़ा से मुक्ति के लिए उन्हें हनुमानजी को स्मरण करना पड़ा और हनुमान बाहुक की रचना करनी पड़ी।

आज भी अस्सी साहित्य का केन्द्र है। प्रतिदिन वहाँ मनों-टनों साहित्यिक कूड़ा निकलता है। काशीनाथ सिंह का '**काशी का अस्सी**' में उसका विधिवत वर्णन है। उसे बुहारिये और अस्सी घाट में प्रवाहित कीजिए जहाँ 'तुलसी तज्यो शरीर'। कहा गया है **काश्यां मरणां मुक्ति** काशी में ही जन्म-मरण से मुक्ति मिलती है। देश के साहित्यकार काशी आयें। नामवरजी ने काशी में जिस प्रकार सुमित्रानंदन पंत के कूड़े से मुक्ति का आवाहन किया है, सारे देश के साहित्यकार इससे प्रेरणा लें और अपना कूड़ा अस्सी घाट पर प्रवाहित कर आलोचकों की प्रेतबाधा से मुक्ति प्राप्त करें। अस्सी घाट ने तुलसीदास को मुक्ति प्रदान की थी। देश के समस्त साहित्यकारों को भी यहीं मुक्ति मिलेगी। 'काशी का अस्सी' के अनुसार प्रेतयोनि से मुक्ति के लिए अस्सी पर गया श्राद्ध की भी व्यवस्था है।

कुर्सी का इतिहास

कैसी भी कुर्सी हो भाई माने रखती है।
बड़े-बड़ों को ये अपने पैताने रखती है
कुर्सी के ही आगे पीछे दुनिया डोल रही
जिसके पास है कुर्सी उसकी तूती बोल रही
...सच पूछो तो कुर्सी
बढ़ई की गलती है
दुनिया की छाती पर मूँग बराबर दलती है।
कोई नहीं छोड़ता कुर्सी जान से प्यारी है
जान से प्यारी है कुर्सी ईमान से प्यारी है
कोई अपनी गोद में कुर्सी दाबे बैठा है
दाबे बैठा है तो कोई चाँपे बैठा है
दाबो चाहे चाँपो भाई यह तो जायेगी
कुर्सी का इतिहास यही कुर्सी दुहरायेगी।

—कैलाश गौतम

ग्रामीण भारत में प्रथम बुक क्लब

—दीनानाथ मल्होत्रा

पुस्तकों की दुकानें, बुक स्टॉल तथा रेलवे स्टेशनों पर लगे सब स्टॉल मिलकर भी पुस्तकों को ग्रामीण और पहाड़ी क्षेत्रों में बिखरे पाठकों तक पहुँचाने के लिए पर्याप्त नहीं थे। उन तक पुस्तकों का वितरण एक चुनौती था। अमेरिका में 'बुक ऑफ़ द मन्थ क्लब' की कार्य प्रणाली देखने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि जहाँ तक हम नहीं पहुँच सके थे, उस बच रहे या छिपे हुए बाज़ार तक केवल बुकक्लब द्वारा ही पहुँचा जा सकता था। इसलिए मैंने भारतीय स्थितियों में रहते हुए एक ऐसा बुक क्लब चलाने तथा भारतीय डाक-घरों की शृंखला का लाभ उठाने की परिकल्पना को विकसित किया।

इसे 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' के नाम से 1962 में आरम्भ किया गया। यह 'बुक ऑफ़ द मन्थ क्लब' से सर्वथा भिन्न थी। हम केवल अपनी पुस्तकों का वितरण करना चाहते थे, जो मूल्य और गुणवत्ता की दृष्टि से अद्वितीय थीं। हमने क्लब के ग्राहकों के लिए एक नई योजना आरम्भ की।

घरेलू लाइब्रेरी योजना के सदस्यों को प्रति पुस्तक एक रुपये मूल्य वाली छह पुस्तकों के पैकेट पहुँचा दिए जाते थे, जिसके लिए उन्हें केवल पाँच पुस्तकों का मूल्य यानी केवल पाँच रुपये देने होते थे। इस पर उनको डाक-ख़र्च भी मुफ़्त था, जिसे हम वहन करते थे। हमारा लाभांश नगण्य-सा होता था, लेकिन हम आश्वस्त थे कि हमारे पैकेट जहाँ-जहाँ डाकिये जाते थे, वहाँ तक पहुँच सकेंगे।

अच्छी बात यह थी कि उन दिनों डाक-सेवा चुस्त और विश्वसनीय थी। यद्यपि डाक की दरें ऊँची थीं, तथापि हमने सोचा था कि एक दिन हम सरकार को समझा सकेंगे कि बुक क्लबों को विशेष रियायत दी जाए।

कुछ समय बाद हमें पता लगा कि जहाँ-जहाँ हमारे पैकेट पहुँचते थे, लोग बड़े प्रसन्न हो जाते थे। कुछ परिवारों में तो ज्यों ही पैकेट खोले जाते, सब सदस्य एक-दूसरे से पैकेट छीनने लगते थे और उन पुस्तकों को घर के सभी सदस्य सबसे पहले पढ़ना चाहते थे। ये सब समाचार हमारे पास धीरे-धीरे पहुँच रहे थे। प्रतिदिन बड़ी संख्या में बुक क्लब के लिए प्रशंसा से भरे पत्र आने लगे, जिनमें हमारे द्वारा की जा रही सेवा को सराहा जाता था।

भौगोलिक दृष्टि से भी हमारी सदस्यता विस्तृत रूप से फैल गई थी, असम के चाय बाग़ानों से लेकर पश्चिम में सौराष्ट्र तक और श्रीनगर से लेकर कन्याकुमारी तक। इसके अतिरिक्त जब हमने अपने सदस्यों की जानकारी लेनी चाही, तो उसमें प्रोफ़ेसर, अध्यापक, गृहिणियाँ, व्यापारी व विद्यार्थियों के साथ-साथ उच्च पदस्थ अधिकारी, हाईकोर्ट के न्यायाधीश, डॉक्टर, अभिनेता और इंजीनियर तक थे। इसने हमारे पुस्तक वितरण को बड़ी शक्ति प्रदान की और पुस्तक-क्रान्ति को प्रोत्साहित किया। हमारे पास प्रत्येक क्षेत्र से अनगिनत पत्र आते थे और उन्हें पढ़ना सदा ही आनन्दप्रद होता था। आवश्यकता पड़ने पर मैं स्वयं धन्यवाद देते हुए उनको व्यक्तिगत रूप से उत्तर देता था।

बुक क्लब के सफल प्रयोग के बाद मैं समझ गया कि भारत में लोग पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं, लेकिन उन्हें प्राप्त करना उनकी राह का रोड़ा है। मैंने सोचा कि सभी बुक पैकेटों पर अथवा कम-से-कम बुक क्लबों द्वारा भेजे जाने वाले पैकेटों पर डाक दरें कम की जानी चाहिए। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मैंने प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के साथ समय निश्चित किया, क्योंकि हम सब जानते थे कि वह पुस्तकों के बड़े प्रेमी हैं और उन्होंने जो पत्र मुझे लिखा था, उससे भी यह भावना प्रकट होती थी कि वह पुस्तक प्रकाशन जगत के प्रति लगाव रखते हैं।

प्रकाशकों के एक प्रतिनिधिमण्डल को साथ लेकर मैं निश्चित समय पर संसद भवन पहुँचा और नेहरूजी के सम्मुख पूरी स्थिति स्पष्ट कर दी।

मैंने पुस्तकों के मूल्य और उस पर आने वाले डाक-ख़र्च को प्रदर्शित करते हुए एक चार्ट तैयार कर लिया था, जो ग्राहक को चुकाना पड़ता था। उस चार्ट को देखकर और स्थिति को समझते हुए पण्डित नेहरू भड़क उठे। उन्होंने फ़ौरन उस समय के संचारमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री को बुला भेजा। उनका कार्यालय पार्लियामेंट स्ट्रीट से कुछ ही दूर था। पण्डित नेहरू ने उनसे कहा कि अवश्य ही कुछ किया जाना चाहिए, क्योंकि लोगों द्वारा पुस्तकें पढ़ना हमारे समाज का लक्ष्य था।

श्री लालबहादुर शास्त्री बहुत सयाने व्यक्ति थे। उन्होंने ध्यानपूर्वक पूरी बात सुनी और कुछ करने का आश्वासन दिया। पण्डित नेहरू हमारे लिए 15 मिनट का समय निर्धारित किया था, लेकिन वह इस समस्या में इतने उलझ गए कि 40 मिनट तक बातें करते रहे तथा उन्होंने पुस्तकों के सम्बन्ध में तथा उनके प्रचार के विषय में भी अपने विचार व्यक्त किए। वह पहले भी जब हमारे वार्षिक सम्मेलन में सम्बोधित करने आए थे, तो इस विषय में बहुत कुछ कह चुके थे।

लेकिन बाद में पता लगा कि जो रियायत दी गई थी, वह कम थी और संचार मंत्रालय ने इससे अधिक कुछ भी और करने में असमर्थता जताई थी। उन्हें अपनी आय और व्यय में सन्तुलन बनाना होता था, क्योंकि यह एक व्यापारिक विभाग था। यह बड़ा विचित्र था, क्योंकि हमारे देश में लोगों के उत्थान में साक्षरता सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थी।

सरकार द्वारा साक्षरता आन्दोलनों पर करोड़ों रुपया ख़र्च करने के बाद तथा राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना होने पर भी परिणाम निराशाजनक ही रहा है। नवसाक्षरों की अधिकतर संख्या पाठ्य-सामग्री के आसानी से उपलब्ध न हो पाने के कारण वापस निरक्षरता की ओर लौट जाती है।

मैंने इस मोर्चे पर संघर्ष करना अभी छोड़ा नहीं है और आशा करता हूँ कि भारत जैसे देश को वास्तव में पुस्तक-पाठक समाज में बदलने के लिए पुस्तकों को देश के कोने-कोने और गाँव-गाँव तक पहुँचाना होगा।

इसमें दो मत नहीं कि जो राष्ट्र समुन्नत हैं वहाँ के नागरिक अपने ज्ञानवर्धन व निपुणता को बढ़ाने के लिए हमेशा पुस्तकें पढ़ते रहते। इसके दो तरीके हैं—एक तो देश में पुस्तकालय हर जगह हों, हर शहर, मुहल्ले में हों और लोग आसानी से पुस्तकें लेकर पढ़ सकें। केवल स्कूल व कॉलेज में पढ़ाई करने से ज्ञानवर्धन का यत्न पूरा नहीं होता। यह तो पूरी उम्र भर पुस्तकें पढ़ने से ही आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से व्यक्ति अपने को आज के युग में समृद्ध बना सकता है।

अन्त में वही बात मैं कहूँगा कि हमारा ग्राम्य प्रधान देश है और सभी जगह पुस्तकें पहुँचाने के लिए डाक की दर नगण्य होनी चाहिए। मुझे यह मुहिम करते हुए एक ज़माना बीत गया परन्तु मैंने हार नहीं मानी। एक प्रसिद्ध शे'र को बदलकर मैं अपने ढंग से लिख रहा हूँ, मैं क्षमा चाहता हूँ वह शायर मुझे माफ़ करेंगे। मेरा शे'र निम्न है—

बड़ी बेरुख़ी से सुन रहे थे हुक्मरानां ये हमारे
हम नहीं थकेंगे डाक-दर की दास्तां कहते-कहते।

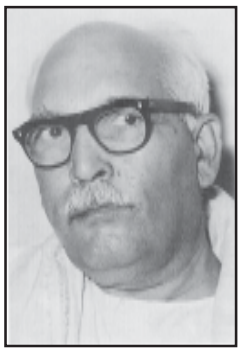

हजारीप्रसाद द्विवेदी

बकलम खुद

जिस दिन मेरा जन्म हुआ उसी दिन किसी मुकदमे की विजय में घरवालों को बारह सौ रुपये मिल गये। उसकी खुशी में मेरा मूल नाम भुला दिया गया और मदरसे के रजिस्टर से लेकर विशाल भारत के पन्नों तक में दो सौ कम करके हजार रुपये की स्मृति को ढोनेवाला हतभाग्य नाम ऐसा प्रसिद्ध हुआ कि लक्ष्मी देवी ने क्रोधवश शाप दे दिया कि 'हजारी' त्व से आगे तुम इस जन्म में नहीं बढ़ सकते।

भाग्य का साँढ़ जन्म से ही है। क्योंकि बूढ़ों ने उसे जो नाम शुरू में दिया था, वह एक जबरदस्त घटना के कारण हमेशा के लिए विस्मृति के अपार सागर में डूब गया। कहीं से घरवालों को हजार रुपये की आमदनी हो गई और जनसाधारण ने इस अपरंपार धनराशि के ऐतिहासिक महत्त्व को स्थायी बना रखने के लिए 'हजारी' नाम दे दिया। आदमी, जैसाकि शुरू में ही कहा गया है, बुरा नहीं है; थोड़ा कृतज्ञ भी है। इस डेमोक्रेसी के खतरे के युग में भी जनसाधारण के दिए हुए नाम को 'प्रसाद' के रूप में वह अब भी ढोए जा रहा है, यद्यपि जन्म के बाद अब तक उसका यह नाम 'Contradiction in terms' ही रहा है। इस युग में यह कम कृतज्ञता की बात नहीं कही जाएगी। सो ऐसा है यह हजारीप्रसाद।

मेरे जीवन की सबसे बड़ी घटना शांति निकेतन में गुरुदेव का दर्शन पाना है। न जाने किस पूर्व पुण्यफल से मुझे यह सौभाग्य मिला था। दर्शन पा सकना ही परम पुण्य का फल है, परन्तु मुझे तो स्नेह मिला था। बाद में 'गुरुवर' के दर्शन मिले। आहा! भागीरथी की निर्मल जलधारा के समान उस प्रेमिक महापुरुष का साहचर्य कितना आह्लादकर था, इस बात को वहीज न सकता है जिसने कभी उस रस का अनुभव किया हो।

इन पंक्तियों के लेखक को लगभग बारह वर्ष तक उनके निकट सम्पर्क में रहने का अवसर मिला था। उनका जीवन बहुत ही संयमित और प्रेरणादायक था। उनके निकट जानेवाले को सदा यह अनुभव होता था कि वह पहले से अधिक परिष्कृत और अधिक बड़ा होकर लौट रहा है। बड़ा आदमी वह होता है जिसके सम्पर्क में आनेवाले का अपना देवत्व जाग उठता है। रवीन्द्रप्रताप ऐसे ही महान पुरुष थे।

काशी विश्वविद्यालय के विषय में अपना मत कहूँ। काशी का वह विश्वविद्यालय मेरी माता के समान है, विश्वभारती भी। दोनों ने मुझे ज्ञान दिए। मेरे दो महान गुरुओं में एक वहाँ के प्रतिष्ठाता हैं, एक यहाँ के। फिर भी मैं कुछ दिनों से यह अनुभव करता हूँ कि हिन्दीभाषी क्षेत्र में रहूँ तो शायद काम करने का अधिक व्यापक क्षेत्र मिले। यह मैं अनुभव करने लगा हूँ। हो सकता है कि यह ठीक न हो। और काशी से बढ़कर और कौन स्थान हो सकता है? वहाँ विरोध है। मैं जानता हूँ कि वह देर तक नहीं टिकेगा। पर कहीं कोई ऐसी बात है जो मुझे काशी की ओर जाने को उत्साहित नहीं कर रही है। कभी-कभी सोचता हूँ कि क्या ऐसी कोई व्यवस्था सम्भव नहीं हो सकती कि जो लोग अध्यक्ष पद चाहते हैं, वे अध्यक्ष हो जाएँ और मुझे चुपचाप पढ़ाने-लिखाने का ही काम दिया जाए और मेरा काम सीधे वाइसचांसलर के अधीन रहे। मुझे धीरेन्द्र वर्माजी ने बताया था कि इलाहाबाद में एक ऐसी नियुक्ति हुई है, शायद इतिहास विभाग में। मैं चाहता हूँ कि मेरा सम्बन्ध केवल विद्या, विद्वानों और विद्यार्थियों से मित्रता का ही सम्बन्ध रहे। प्रतिद्वंद्विता का नहीं।

1960 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से निकाल दिए गए। दुःखी हुए, अपमानित हुए पर लड़ाई नहीं लड़ी, अदालत में नहीं गए। सब कुछ सहन कर लिया। काशी छोड़ने के बाद द्विवेदीजी 1960 से '67 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर-अध्यक्ष रहे।

अपने छोटे-से जीवन में कितनी ही बार मुझे यह अनुभव हुआ है कि हम दो-चार वर्ष आगे तक का भविष्य भी नहीं जानते। दीर्घकालिक भावी योजना तो केवल बात-की-बात है। कई बार यह भ्रम हो जाता है कि मैं कुछ कर सकता हूँ, योजनाएँ बना सकता हूँ, उन्हें कार्यान्वित कर सकता हूँ और उसका सुफल भी प्रत्यक्ष देख सकता हूँ; परन्तु प्रायः ऐसा नहीं होता। मुझे बराबर यह अनुभव होता है कि योजना बनानेवाला कोई और है। भविष्य को रूप देने की शक्ति अन्यत्र निहित है। मनुष्य के भीतर जो इच्छाशक्ति है, वह थोड़ी दूर तक—बहुत थोड़ी दूर तक—ही स्वतंत्र है। अन्तिम रूप से किसी इतिहास विधाता की योजना ही फलवती होती है।

1971 की एक संध्या मैं अपने कार्यालय में बैठा था, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी अपने एक-दो सहयोगियों के साथ आये। उन्होंने कहा ''मोदी आज मैं तुम्हें अपना गुरू बनाने आया हूँ।'' मैं हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। ''पण्डितजी मुझसे क्या अपराध हो गया?'' द्विवेदीजी ने कहा—''मैं उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी का अध्यक्ष हो गया हूँ। पुस्तक प्रकाशित करना और उसका विक्रय मैं नहीं जानता, तुम लखनऊ चलो, मेरी सहायता करो।''

पण्डितजी ने परामर्शदाता के रूप में दो-तीन बार मुझे लखनऊ बुलाया। वे कहते थे लिखना मेरा काम है, प्रकाशन और विक्रय मेरे वश का नहीं। **—पुरुषोत्तमदास मोदी**

लेखक बनने के लिए पाठक बनो

अच्छा लेखक बनना है तो सबसे पहले अच्छा पाठक बनो। फिर पाठकीय उम्दा विषयों पर तन्मय होकर लिखो। पाठकों के लिए पठनीय (पढ़ने लायक) सामग्री उपलब्ध कराना लेखक की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

लेखन से पूर्व अच्छे पाठक के गुण होने चाहिए। बिना अच्छे पाठक के गुण के अच्छा लेखन सम्भव ही नहीं। लेखन में प्रसंग के अनुकूल धारा में सतत बहना जरुरी है, साथ ही समसामयिकता का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

—मैथिलीशरण गुप्त

भूल सुधार

'भारतीय वाङ्मय' के मई-जून (संयुक्तांक) 2007 में पृष्ठ 4 पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बलिया भाषण की तिथि नवम्बर, 1884 है, भूलवश 1984 छप गयी है।

इसी प्रकार पृष्ठ 19 पर 'नामालूम रिश्तों का दंश' पुस्तक कहानी-संग्रह है न कि कविता-संग्रह।

इस भूल के लिए खेद है।

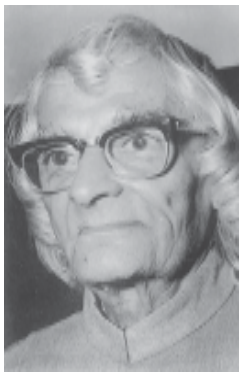

सुमित्रानंदन पंत की कविता

—रामदरश मिश्र

कवि पंतजी का एक चौथाई कूड़ा है, यह कहा डॉ० नामवर सिंह ने। यह कहने का उन्हें अधिकार है। किसी को भी किसी लेखक पर अपना अप्रिय मत व्यक्त करने का अधिकार है तो नामवरजी ने पंत पर अपना अप्रिय मत व्यक्त कर दिया तो कौन-सी आफत आ गयी? यह उनका मत है। उनका मत सबका मत तो नहीं हो गया। फिर इतना हल्ला-गुल्ला किसलिए? क्यों लोग मान लेते हैं कि नामवरजी ने जो कह दिया वह अन्तिम सत्य हो गया। माना कि नामवरजी हमारे समय के विशिष्ट आलोचक हैं और उनकी बात बहुत ध्यान से सुनी जाती है किन्तु क्या लोगों को अपने मत के प्रति कोई सम्मान-भाव नहीं रहा? क्यों अमुक जी तमुकजी कुछ ऐसा-वैसा बोलते हैं तो लोग उनके विरोध में हल्ला-गुल्ला करने लगते हैं और इस तरह उनके कहे को अनावश्यक महत्त्व देते हैं। हिन्दी में कई अमुकजी तो ऐसे हैं जो साहित्य की दुकान सजाये बैठे हैं और रह-रह कर ऐसी ऊल-जलूल बातें फेंकते रहते हैं जिनके कारण देर तक उनके विरोध में स्वर गूँजते रहते हैं और वे यों ही चर्चा में बने रहते हैं। वे मन ही मन मुस्करा कर सोचते हैं—''हाँ वे यही तो चाहते रहे हैं।''

तो किसी को भी यह अधिकार है कि वह सुमित्रानंदन पंत के काव्य के एक चौथाई को कूड़ा समझे लेकिन यह बात सम्मान से भी तो कही जा सकती थी। हम सब मानते हैं कि पंत की पूर्वार्ध की काव्य-यात्रा बहुत महत्त्वपूर्ण है। 'ग्राम्या' के पश्चात अरविन्दवादी दर्शन के प्रभाव से उन्होंने जो लिखा, वह मानव-मूल्य और दर्शन-विमर्श की दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण है किन्तु वह अनुभव-सघनता के अभाव में निष्प्राण लगता है। उनका महाकाव्य 'लोकायतन' एक बहुत बड़े फलक पर समय और समाज को उपस्थित करता है और प्रकृति तथा मानव की विविध छवियाँ अंकित करता है किन्तु वह समग्रत: महाकाव्य की सघनता और गरिमा नहीं पा सका है। किन्तु कुल मिलाकर पंत एक बड़े कवि-व्यक्तित्व हैं। छायावाद का प्रथम स्फुरण उन्हीं की कविताओं में लक्षित होता है। नयी अनुभूति और भाषा की जो फड़फड़ाहट पंत की प्रारम्भिक कविताओं में दिखाई देती है वह अद्‌भुत है। 'पल्लव' की भूमिका छायावादी चिंतन का एक प्रामाणिक दस्तावेज है। पंत के चिंतन में मानवीय जीवन के प्रति लगाव निरन्तर सघन होता गया और इसीलिए वे 'युगांत' तक आते-जाते मार्क्सवादी हो गये। फिर वे उसी के तहत अरविन्द दर्शन की ओर उन्मुख हुए। यह बात दूसरी है कि यह दर्शन उनके काव्य को रास नहीं आया। पंत की एक विशेषता यह भी है कि उनके काव्य में वस्तु-वैविध्य है। यानी उनकी कविताएँ आलंबन से भाव-ग्रहण करती हैं, भाव निरावलंब होकर सूने में भटकते नहीं। तो पंत के समूचे व्यक्तित्व को ध्यान में रखते हुए उनके साहित्य को सम्मान से याद करने की आवश्यकता है।

जो लोग ज्यादा लिखते हैं, उनके समस्त लेखन का स्तर समान नहीं होता। क्या प्रेमचंद का सारा लेखन समान भाव से उच्चस्तरीय है? क्या निराला की सभी कविताओं में 'रोम की शक्ति पूजा' और 'सरोज स्मृति' की सी ऊँचाई है? क्या उनकी कई कविताएँ कुछ अटपटी-सी नहीं हैं? जो लोग शिखर पर से शिखर पर कूदना चाहते हैं वे बहुत थम-थम कर लिखते हैं और एक सीमा के बाद लिखना ही छोड़ देते हैं। उन्हें डर रहता है कि शिखर रथ होने का जो गौरव उन्हें प्राप्त है वह नया लिखने से धूमिल न पड़ जाय। लेकिन जो लोग अपने समय और समाज के साथ चलते रहते हैं, जिनसे यथार्थ-जगत के छोटे-बड़े, अधिक या कम महत्त्व के प्रसंग टकराते हैं और कुछ लिखने को उत्तेजित करते रहते हैं, वे यह नहीं सोचते कि वे शिखर से शिखर पर कूट रहे हैं या शिखर से घाटी में उतर रहे हैं या सड़क से पगडंडी पर जा रहे हैं। वे किसी आलोचक की परवाह किये बिना निश्चिंत भाव से लिखते रहते हैं। उनके विपुल साहित्य में से जो अत्यधिक मूल्यवान उभरता है वह साहित्य की निधि होता है। जो सामान्य है वह भी यथार्थ और लेखकीय व्यक्तित्व की पहचान कराने में भूमिका निभाता है। किसी भी लेखक का आकलन उसके महत्त्वपूर्ण लेखन के आधार पर ही होता है।

चलो मान लेते हैं कि नामवरजी ने जिस भाषा में कहा वह भी ठीक है किन्तु क्या वह कहने का अवसर था। जन्मशताब्दी मनाई जा रही थी महादेवीजी की, और खिंचाई हो रही है पंत की। यानी लगता है कि पंत को नीचे गिराये बिना महादेवी की महत्ता की पहचान सम्भव नहीं है। लगता है मंच का तकाजा बन गया है कि जिस पर बात की जाये उसकी तो उस समय प्रशंसा की जाये (बाद में भले ही चुप्पी साध ली जाय) और उसके आसपास के लोगों पर दो-चार हाथ लगा दिये जायें—अनावश्यक रूप से। हिन्दी में यह परम्परा चल पड़ी है। कभी तुलसी को सूर से भिड़ाया जाता है, कभी बिहारी को देव से, कभी अज्ञेय को मुक्तिबोध से और इसी तरह कभी किसी को किसी से, किसी को किसी से। वास्तव में हर लेखक का अपना रंग होता है, उसे उसी के रूप में स्वीकारना चाहिए। तुलना करके एक रंग को दूसरे रंग से, एक महत्ता को दूसरी महत्ता से काटने और छोटा करने की क्या आवश्यकता? कोई बड़ा रचनाकार है तो उसके बड़प्पन को स्वीकारिए, उसे सम्मान दीजिए लेकिन उससे छोटे रचनाकारों की अपनी महत्ता को कलंकित तो न कीजिए, बड़े रचनकारों से तुलना करके उन्हें खारिज तो न कीजिए। उन्हें भी अपनी विशेषताओं के साथ सम्मान से जीने दीजिए—जीवन में भी और इतिहास में भी। यह आवश्यक नहीं कि आपको जो पसन्द नहीं है वह औरों को भी नापसन्द हो या कम पसन्द हो। आप अन्तिम निर्णायक होने का दंभ क्यों पाल लेते हैं? औरों के पास भी समझ है, विवेक है, पसन्द है, नापसन्द है। वे आपके निर्णय के विपरीत अपने निर्णय के साथ चलना चाहते हैं। आपके मुखापेक्षी आपके चेले-चपाटी भले ही आपके निर्णय को बड़े सम्मान के साथ अपना निर्णय बना कर ओढ़ लेते हों किन्तु स्वतंत्रत चेता पाठक तो वही पढ़ता है जो उसे अच्छा लगता है। वह अपने ढंग से रचनाओं से संवाद करता है।

क्या यह बहुत जरूरी है कि छायावाद के चार विशिष्ट कवियों की रैंकिंग की ही जाय? प्रसाद और निराला में प्रथम कौन है यह बात भी चर्चा में उठती रहती है। 'कामायनी' अपनी जगह

1970 में वाराणसी में आयोजित कवि सम्मेलन में सुमित्रानंदन पंत जी कविता पढ़ने खड़े हुए। उन्होंने अपने सामने अगली पंक्ति में बैठे प्रबुद्ध साहित्यकारों की ओर दृष्टि डाली और अपनी अरविन्द दर्शन वाली कविताएँ सुनानी शुरू की। पीछे की ओर बैठे श्रोताओं में हलचल हुई, लगा पंतजी की अरविन्द दर्शन की कविताओं में उन्हें रस नहीं आ रहा है। मैंने पंतजी से कहा—कृपया बाँसों का झुरमुट, संध्या का झुटपुट, लो चहक रही चिड़ियाँ, टी-वी-टी-टुट्-टुट् तथा 'ग्राम्या' से धोबियों का नृत्य आदि कविता सुनाइये।

पंतजी ने झूम-झूम कर कविता सुनाना शुरू किया, हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

बेजोड़ कृति है। 'राम की शक्ति पूजा' का जवाब नहीं है। निराला की अन्य कविताओं में भी काफी घनत्व है, वैविध्य है किन्तु 'प्रसाद' एक बड़े नाटककार, उपन्यासकार और कहानीकार भी हैं। जब रैंकिंग की जायेगी तो समग्र व्यक्तित्व को ध्यान में रखना होगा। इसलिए कहता हूँ क्या इन कवियों की महत्ता को वर्गीकृत करना आवश्यक है? प्रसाद अपनी जगह बड़े हैं, निराला अपनी जगह। पंत के काव्य का अपना सौन्दर्य है और महादेवी के काव्य का अपना। किसी को छोटा-बड़ा बनाये बिना सबके काव्य का आस्वाद लिया जा सकता है, और सबकी अपनी-अपनी छोटी-बड़ी छवियों को रेखांकित किया जा सकता है और यदि रैंकिंग करना जरूरी ही हो तो बहुत से लोग पंत को तीसरे ही स्थान पर रखेंगे। पंत का काव्य अपनी कुछ सीमाओं के बावजूद बहुत महत्त्वपूर्ण है। वह प्राय: वस्तु आधारित है, उसमें अरूप भाव-प्रवाह नहीं है। विषय वैविध्य के कारण उसमें महादेवी के काव्य की सी एकरसता नहीं है। महादेवी का व्यक्तित्व अपनी कविताओं की अपेक्षा अपने गद्य के कारण बड़ा हो उठता है। उनके गद्य में विविध व्यक्तियों के चरित्र-रंगों की, उनकी तकलीफों और इंसानी खुशबुओं की कथा है। उनका गद्य मिट्टी से जुड़े लोगों का दर्द बयान करता है। तो महादेवी को देखना होगा तो इस समग्रता में देखना होगा। उन्हें केवल कविता में देखने से तो उनका बहुत कुछ अनदेखा रह जायेगा।

पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail: sales@vvpbooks.com

प्रसिद्ध पश्चिमी विद्वानों—एडबीनग्रीब्स, ग्रडस, ग्रियर्सन, हार्नले, रोडल्फ, ओल्डाम, पीनकैट इत्यादि ने हिन्दी के विकास में बहुत योगदान दिया।

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का नया अंक मिला। सदा की तरह बहुत सुन्दर बन पड़ा है। सूचनाएँ तो हैं ही साथ ही उत्कृष्ट रचनाएँ भी आप देते रहते हैं। महादेवी वर्माजी पर आपने अच्छी सामग्री दी है। शान्तिप्रिय द्विवेदीजी पर लिखा लेख बहुत अच्छा लगा। उनसे मेरा भी अच्छा परिचय था। श्री रामकृष्ण का लेख भी पठनीय है।

मुझे तो आपकी इस छोटी-सी पत्रिका से बहुत कुछ जानने को मिलता है। बहुत-बहुत बधाई आप लोगों को। आपका सम्पादकीय सचमुच आज की स्थिति को स्पष्ट करता है। 'शब्द' ही नहीं सब कुछ अर्थहीन हो गया है। दु:ख अपने शासकों के चरित्र को देखकर होता है। पर क्या किया जाये?

देखिये कब तक चलता है ये सब।

—विष्णु प्रभाकर
बी-151, महाराणा प्रताप एन्क्लेव
पीतमपुरा, दिल्ली-110 034

साहित्यिक-सांस्कृतिक अवदान को जन-जन तक प्रसारित करती पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' नि:सन्देह आज की श्रेष्ठ सूचना प्रधान मासिकी है। पुरुषोत्तमदासजी का सम्पादकीय महीयसी महादेवी पर शानदार रिपोर्टिंग एवं स्मृतिजन्य फोटो, नामवरजी के कथन पर साहित्य-समाज की व्यथा, साथ ही विविध गतिविधियों का संक्षिप्त सार्थक प्रस्तुतीकरण मई-जून 2007 अंक की विशेषता है।

—मोतीलाल जैन 'विजय'
कटनी (म०प्र०)

'भारतीय वाङ्मय' का जून, 2007 अंक प्राप्त हुआ। पंतजी और महादेवीजी के साथ आपको देखकर सुख मिला। इस अंक की सबसे बड़ी सार्थकता यही है कि चित्र ने अनेक यादें ताजा कर दी। **—धर्मेन्द्र गुप्त,** दिल्ली

पंत बड़े या महादेवी इन्हें जो पढ़ेगा वही तोलमोल के फैसला देगा। नामवरजी कहाँ की बुआ हैं जो महादेवी, पंत पर निर्णय दे रही हैं। खैर चर्चा में रहने के लिये हथकंडे जरूरी हैं।

पत्रिका को दस्तावेजी बनाने के लिये हम आपके आभारी हैं।

—शब्बन खान 'गुल', बहराइच

'भारतीय वाङ्मय' के अप्रैल अंक का सम्पादकीय उद्वेलित करने वाला है। आपने ही मेरे मन की बात कह दी। ज्ञान को ज्ञान रहने दें। उसे उद्योग या उत्पाद न बनाया जाए। कमलेश्वरजी पर डॉ० बच्चन सिंह और राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी पर अच्युतानंदजी के संस्मरणात्मक लेख मर्मस्पर्शी हैं।

'भारतीय वाङ्मय' को पढ़ना गागर में सागर को देखने की तरह है। बीस पृष्ठों वाली इस पत्रिका में तरह-तरह के रंग समाए रहते हैं। चुनिंदा साहित्यिक हलचलें, कुछ महत्त्वपूर्ण संस्मरण और सामयिक लेख। सब पर भारी पड़ता है आपका सम्पादकीय। भौतिक चिंतन से लबरेज विचारों को पढ़कर प्रेरणा मिलती है। छोटा सम्पादकीय बड़े-बड़े मुद्दे उठाता है। मई-जून अंक में महादेवी एवं शांतिप्रियजी पर प्रसारित लेखों से अनेक संग्रहणीय जानकारियाँ मिलीं। हमारे वरिष्ठ साहित्यकारों के दिमाग में कितना 'कूड़ा' भर चुका है, इसका भी पता चलता है।

साहित्य साधना का पथ है, यहाँ साधकों पर ऊँगली उठाना ठीक नहीं।

—गिरीश पंकज, रायपुर

अप्रैल 07 अंक में सम्पादकीय 'ज्ञान का उद्योग, उद्योग का ज्ञान' में तथ्य प्रकट किए गये हैं उन्हें हम भारतीयों को समझना चाहिए। अपने देश की प्रतिभा का लाभ देश को मिलेगा तो हमारे माननीय राष्ट्रपति श्री कलामजी का स्वप्न साकार होगा। सन् 2020 तक भारत को विकसित देश के रूप में देखने का। काश देशवासी समझें।

—विनोदशंकर गुप्त, हिसार

प्रख्यात साहित्यकार कमलेश्वर की याद में डॉ० बच्चन सिंह का यह कहना कि 'हिन्दी का सलमान रूश्दी कभी न लौटने के लिए चला गया' श्रेष्ठ साहित्यिक श्रद्धांजलि है। निश्चय ही कमलेश्वर हिन्दी साहित्य जगत के जीवंत नायक थे। कमलेश्वर एक साथ कहानीकार, उपन्यासकार, पत्रकार और नाटककार थे और सभी स्तरों पर एक साथ सक्रिय रहे। डॉ० देवव्रत जोशी का लेख आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के व्यक्तित्व के उस पहलु को उजागर करता है जिससे साहित्य जगत अज्ञात रहा। अपने संक्षिप्त कलेवर में 'भारतीय वाङ्मय' बहुत अच्छा लगा।

—अरुणकुमार पाण्डेय
कामकी, अरुणाचल प्रदेश

'भारतीय वाङ्मय' के मई-जून अंक में श्री रामकृष्ण ने अपने लेख 'आधुनिक हिन्दी : भारतेन्दु पूर्व' के अन्त में लिखा है कि ''भारतेन्दु को आधुनिक हिन्दी का जन्मदाता कहने जैसे पूर्वाग्रह केवल भावुक उद्गारों से बचकर हिन्दी में बौद्धिक और वैज्ञानिक अध्ययन की ओर बढ़ना चाहिए।''

भारतेन्दु को कोई भी आधुनिक हिन्दी का जन्मदाता नहीं कहता। वरन् वे 'खड़ीबोली के जनक थे'। इसमें कही पूर्वाग्रह या दुराग्रह नहीं है, केवल आग्रह है।

—गगनेन्द्रकुमार केडिया, वाराणसी

वर्ष 1909 से मारीशस में 'हिन्दुस्तानी' नामक तथा फिजी में 'फिजी समाचार' नाम से हिन्दी साप्ताहिक छप रहे हैं।

सम्मान-पुरस्कार

राष्ट्रपति द्वारा 30 विद्वान सम्मानित

राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने 21 मई 2005 को संस्कृत, फारसी तथा पाली प्राकृत और अरबी भाषा के 30 विद्वानों को सम्मानित किया। इनमें पाँच युवा विद्वान भी शामिल हैं। डॉ० कलाम ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक गरिमापूर्ण समारोह में इन विद्वानों को वर्ष 2006 का व्यास सम्मान प्रदान किया। वयोवृद्ध विद्वानों के लिये यह सम्मान 60 वर्ष से अधिक आयु के लेखकों, शिक्षकों को अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये दिया जाता है।

सम्मान में 50 हजार रुपये, शाल तथा एक प्रशस्ति-पत्र शामिल है। डॉ० कलाम ने संस्कृत के 15, पालि प्राकृत के एक, अरबी और फारसी के तीन-तीन तथा संस्कृत के पाँच युवा एवं पाली प्राकृत, अरबी तथा फारसी के एक-एक युवा विद्वान को सम्मानित किया। युवा विद्वानों के लिये सम्मान राशि एक लाख रुपये प्रदन की गयी। **संस्कृत :** बाल गंगाधर शर्मा, आचार्य मुनीश्वर झा, प्रो० उषा चौधरी, वसंत गिरधारीलाल पारिख, मथुरादत्त पाण्डेय, गंगादत्त शास्त्री, शेष चला शर्मा, कमलेशदत्त त्रिपाठी, रामकृष्णमूर्ति शास्त्री, जगदम्बा प्रसाद सिन्हा, डॉ० पारसनाथ द्विवेदी, शिवाजी उपाध्याय, मानसराम शर्मा, देवव्रत सेन शर्मा, दिलीपकुमार कांजीलाल, **पालि प्राकृत :** डॉ० प्रेम सुमन जैन अरबी, अवबूकर मोहम्मद अल हाशमी, प्रो० अब्दुल अलीम खान, प्रो० अब्दुल अली, **फारसी :** प्रो० नर्गिस जहान, प्रो० महमूद आलम, अब्दुल सुभान, **युवा विद्वान :** श्री बुद्धेश्वर सारंगी, एन श्रीनिवासन, रामचन्द्र बुधियाल, एस० तत्त्वसामी दीक्षित, सुखदेव भोई, **पालि प्राकृत :** राजेश रंजन, **अरबी :** डॉ० मोहम्मद सानाउल्लाह।

हिन्दुस्तानी एकेडमी पुरस्कार

देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थान हिन्दुस्तानी अकादमी ने फिर से 'एकेडमी पुरस्कार' शुरू करने का निर्णय लिया है। यह सम्मान वर्ष 1998 के बाद से किसी को नहीं दिया गया। लगभग एक दशक बाद इसे फिर से शुरू करने का निर्णय लिया गया है और अब हर वर्ष यह योग्य साहित्यकारों व रचनाकारों को दिया जाएगा। इसके लिए एकेडमी के अध्यक्ष प्रो० योगेन्द्रप्रताप सिंह के अनुसार इस सम्बन्ध में आने वाली वित्तीय अड़चनों को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। अकादमी लोकभाषा के साहित्यकारों को भी पुरस्कृत करेगी।

सरला बिड़ला को प्रवासी प्रतिभा पुरस्कार

सामाजिक कार्यकर्ता और उद्योगपति **सरला बिड़ला** को सांस्कृतिक, सामाजिक और अकादमिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान के लिए राजस्थान फाउण्डेशन की ओर से प्रतिष्ठित 'प्रवासी प्रतिभा पुरस्कार' उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत द्वारा 31 मई 2007 को प्रदान किया गया।

भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार
2004-2005

आकाशवाणी, वाराणसी केन्द्र के पूर्व निदेशक **श्री विश्वनाथ पाण्डेय** को विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित उनकी पुस्तक **सम्प्रेषण और रेडियो शिल्प** के लिए गत दिनों दिल्ली के शास्त्री भवन में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा आयोजित एक समारोह में वर्ष 2005 के लिए 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र मान पुरस्कार' प्रदान किया गया। श्री विश्वनाथ पाण्डेय पटना तथा राँची सहित आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों पर वर्ष 1963 से 1995 तक सेवारत रहे। उन्होंने भारत सरकार द्वारा प्रतिनियुक्ति के आधार पर फीजी ब्राडकास्टिंग कमीशन में भी अपनी सेवाएँ दी।

सूर्यकुमार पाण्डेय

कवि एवं व्यंग्य स्तम्भकार **सूर्यकुमार पाण्डेय** को बाल कविता पुस्तक 'चौका छक्का' पर बाल साहित्य वर्ग में प्रथम पुरस्कार 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार' नई दिल्ली स्थित शास्त्री भवन में आयोजित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार वितरण समारोह में प्रदान किया गया।

डॉ० अशोक जेराथ और डॉ० ज्ञानप्रकाश पाण्डेय को पत्रकारिता और जनसंचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए क्रमश: वर्ष 2004 और 2005 का पहला भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार दिया गया है। राष्ट्रीय अखण्डता से सम्बन्धित लेखन का प्रथम पुरस्कार (2004) श्री गुलशन राय को दिया गया। पत्रकारिता और जनसंचार के क्षेत्र में 2004 का दूसरा पुरस्कार सर्वश्री के०एस० मेहता और चंद्रकांत को संयुक्त रूप से दिया गया है, जबकि तीसरा पुरस्कार श्री अमी आधार को मिला। वर्ष 2005 में दूसरा पुरस्कार सुश्री वर्तिका नन्दा और तीसरा पुरस्कार विजय मनोहर तिवारी को प्रदान किया गया।

महुआ माजी को अन्तरराष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान

भारत की सुश्री महुआ माजी को लन्दन के हाउस ऑफ लार्ड्स में अन्तरराष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान प्रदान किया जायगा। कथा यू०के० के संस्था द्वारा यहाँ जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार **सुश्री माजी** को यह सम्मान 20 जुलाई को उनके उपन्यास मे० बेरिशाइल्ला के लिए दिया जायगा। गत वर्ष यह सम्मान जामिया विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रोफेसर असगर वजाहत को दिया गया था। वह हाउस ऑफ लॉर्ड्स में सम्मानित होने वाले पहले भारतीय लेखक थे। इंदु शर्मा सम्मान के तहत लेखक को दिल्ली से लन्दन तक की हवाई यात्रा, एक शील्ड, शाल तथा एक सप्ताह तक लन्दन प्रवास की सुविधा दी जायगी। सुश्री माजी ने यह उपन्यास बंगलादेश के मुक्ति संग्राम की पृष्ठभूमि में लिखा है। इस उपन्यास का अंग्रेजी और बंगला में भी अनुवाद प्रकाशित हो रहा है।

'वीणा' सम्पादक डॉ० श्यामसुन्दर व्यास को पं० बृजलाल द्विवेदी साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान

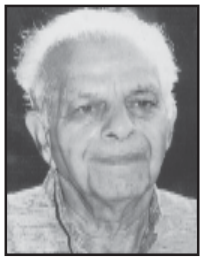

इंदौर प्रेस क्लब में डॉ० सरोज कुमार ने मध्यप्रदेश की प्राचीनतम पत्रिका 'वीणा' के सम्पादक डॉ० श्यामसुन्दर व्यास को सम्मानित करते हुए कहा—पत्रकारिता में बाहर के भाव दिखते हैं जबकि साहित्य में मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति होती है। पत्रकारिता और साहित्य में यही अन्तर है। डॉ० व्यास विगत 35 वर्षों से 'वीणा' का सम्पादन कर रहे हैं। महापौर डॉ० उमाशशि शर्मा ने कहा कि अब साहित्यकार कम होते जा रहे हैं, पत्रकार बढ़ते जा रहे हैं। इस अवसर पर डॉ० श्यामसुन्दर व्यास को शाल-श्रीफल, सम्मान-पत्र, प्रतीक चिह्न और ग्यारह हजार रुपये सम्मान राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

नाईजीरियाई लेखक को बुकर पुरस्कार

नाईजीरिया के जाने-माने साहित्यकार चिनुआ अचेबे को प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार के लिए नामित किया गया है। 76 साल के अचेबे को उनके 1958 में प्रकाशित पहले उपन्यास 'थिंग्स फाल अपार्ट' के लिए बेहतर जाना जाता है। इस उपन्यास की एक करोड़ से अधिक प्रतियाँ बिकी थीं। 1990 में एक कार दुर्घटना के बाद उन्हें लकवा मार गया।

पुरस्कार स्वरूप चयनित लेखक को 60000 पाउण्ड की राशि दी जाती है। अचेबे को ब्रिटेन के आक्सफोर्ड में 28 जून को यह सम्मान एक समारोह के दौरान दिया गया। अचेबे को आधुनिक अफ्रीकी साहित्य का जनक भी माना जाता है।

ज्ञानपीठ नवलेखन पुरस्कार

तरुण कथाकार **चंदन पाण्डेय** को वर्ष 2007 का 'ज्ञानपीठ नवलेखन पुरस्कार' उनके पहले कहानी संग्रह की पाण्डुलिपि 'भूलना' के लिए दिया जायगा। पुरस्कार राशि पच्चीस हजार रुपये है। देवरिया जिले में पटखौली गाँव के निवासी चंदन बीएचयू में एमबीए के छात्र हैं। सम्प्रति मुम्बई में अपनी अध्ययन यात्रा पर हैं।

साहित्यिक सेवा पुरस्कार

समय साहित्य सम्मेलन पुनसिया बाँका के 13वें महाधिवेशन में दिनांक 15 अप्रैल 2007 को पुनसिया में सर्वश्रेष्ठ कर्ण पुरस्कार **चन्द्रप्रकाश 'जगप्रिय'** को समस्त साहित्यिक सेवाओं के लिए, खुशीलाल मंजर को मंगलीलाल स्मृति पुरस्कार, रंजन कुमार को चक्रधर-पार्वती पुरस्कार, डॉ० प्रदीप प्रभात को हृदयनारायण स्मृति पुरस्कार, सांत्वना साह को मेवालाल मिश्र स्मृति पुरस्कार, राजेन्द्रप्रसाद सिंह को सहदेव-सुनैना पुरस्कार, रामावतार राही को भुवनेश्वर-सावित्री पुरस्कार, संजयकुमार को अचल भारती पुरस्कार, श्वेता भारती को सुरेन्द्र-शिरोमणि पुरस्कार, राजेश कु० नंदन को महेश प्रसाद सिंह स्मृति पुरस्कार एवं डॉ० कैयूम अंसारी को मदनमोहन मालवीय सम्मान से सम्मानित किया गया। प्रत्येक साहित्यकार को प्रशस्ति पत्र, अंगवस्त्र एवं इक्कीस सौ रुपये की नगद राशि से सम्मानित किया गया।

भारत सरकार
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
मानव संसाधन विकास मंत्रालय

हिन्दीतर भाषी हिन्दी लेखक पुरस्कार एवं शिक्षा पुरस्कार
(2005-06 एवं 2006-07)

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय उपरोक्त संदर्भित दो योजनाओं का क्रियान्वयन कर रहा है। इन योजनाओं के अन्तर्गत एक लाख रुपये मूल्य के प्रत्येक क्रमश: 19 एवं 5 पुरस्कारों का प्राविधान है। सम्बन्धित क्षेत्रों के लेखकों की प्रविष्टियाँ निर्धारित प्रपत्र पर आमंत्रित है। नियम एवं शर्तों सहित निर्धारित प्रारूप पत्र निम्नांकित से नि:शुल्क प्राप्त किये जा सकते हैं—

सहायक निदेशक (एक्सटेंशन)
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
पश्चिम ब्लाक-VII, आर०के०पुरम
नई दिल्ली-110066
फोन : 26105211, फैक्स : 26100758

पुस्तक की 5 प्रतियों सहित विधिवत भरे हुए प्रारूप पत्र उपरोक्त वर्णित पते पर विलम्बतम 30.9.2007 तक निश्चित रूप से अवश्य जमा करें।

महादेवी वर्मा और ठलुआ बीरबल

एक गायक को अपने गायन पर बड़ा गुरूर एवं घमण्ड था। स्व० श्री मुरारीलाल केडिया ने उनके बारे में कहा कि ये सबको 'असुर' (बुसेरा और राक्षस) और स्वयं को 'ससुर' (सुरीला और श्वसुर) समझते हैं। डॉ० राय आनन्दकृष्ण ने जब यह लतीफा स्व० श्रीमती महादेवी वर्मा को सुनाया तो वे अट्टहास कर उठीं। उन्हें यह चुटकुला बहुत प्रिय था।

कथन

पथ निर्देशक व निर्माता होती हैं पुस्तकें

पुस्तकों से न केवल चेतना का संस्कार होता है अपितु इससे तरह-तरह के ज्ञान का भी संचय होता है। इतना ही नहीं किताबें हमारी मित्र होती हैं तो सलाहकार, पथ निर्देशक व निर्माता भी होती हैं। ये सिर्फ खुद का ही नहीं पूरे समाज का निर्माण करती हैं। जो हमने पढ़ा कोई जरूरी नहीं कि वह हमें याद ही रहे लेकिन उसका कुछ अंश दिमाग में बरकरार जरूर रहता है। ऐसे में बराबर अध्ययन करते रहना सभी के लिए हितकारी होता है। **—काशीनाथ सिंह**

जब तक भारत में शिक्षा निम्न तबके अथवा देश के अन्तिम व्यक्ति तक नहीं पहुँच जाती, तब तक इसे विदेशी पूँजी निवेश से वंचित रखा जाना चाहिए। विदेशी पूँजी निवेश से भारत को कई दूरगामी घाटे हो सकते हैं। सर्वप्रथम तो उच्च शिक्षा का पूर्णतया निजीकरण और व्यवसायीकरण हो जाएगा। मतलब यह कि उच्च शिक्षा न केवल विदेशी कम्पनियों एवं यहाँ के लोगों के लिए पैसा कमाने का हथकंडा बन जाएगी। इसका देश से कोई सामाजिक सरोकार नहीं रहेगा। जब हमारी सरकार यह मानने को तैयार है कि भारत गरीबों का देश है, तो उसे यह भी मान लेना चाहिए कि कोई विदेशी विश्वविद्यालय किसी गरीब और ग्रामीण व्यक्ति को शिक्षित नहीं कर सकता। **—प्रो० यशपाल**

नामवर और विवाद

नामवर के साथ विवाद नया नहीं है। वे हमेशा विवादों में रहते हैं। कई बार तो विवाद आमंत्रित भी करते हैं। वे बोलते हैं, तब विवाद पैदा होता है और जब चुप्पी ओढ़े रहते हैं, तब भी। उनकी एक किताब है 'वाद-विवाद-संवाद'। मुझे लगता है कि गत 40-50 वर्षों के हिन्दी के साहित्यिक-सांस्कृतिक वाद-विवाद-संवाद में नामवर की केन्द्रीय उपस्थिति रही है। उनके बगैर गत आधी सदी के बौद्धिक विमर्श का खाका नहीं तैयार किया जा सकता।

जिस बनारस में नामवर जन्मे, उसी बनारस में कई दिन उन्हें फांकाकशी में काटने पड़े। कईकई दिन तो गुड़ और पानी से ही कट गए। हिन्दी के इस महान सांस्कृतिक नायक को कम्युनिस्ट पार्टी के प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ने के कारण काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राध्यापक पद से हटाया गया। मैंने स्वयं अध्यापन किया है और आदर्श अध्यापक के रूप में मेरे सामने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर और हजारी प्रसाद द्विवेदी रहे हैं। उन दोनों महापुरुषों की कक्षा की छात्रा होने का गौरव मुझे हासिल है।

ऐसे अध्यापक नामवर को बीएचयू से हटाया गया और उसके बाद एक अदद अध्यापकी के लिए उन्हें यहाँ-वहाँ भटकना पड़ा। कभी सागर, तो कभी जोधपुर। और अंतत: दिल्ली। नामवर को सागर विश्वविद्यालय से भी हटा दिया गया। असली कारण यह बताया जाता है कि नंददुलारे वाजपेयी को नामवर की बेबाक आलोचना पसंद नहीं थी। वाजपेयी को यह पसन्द नहीं था कि सभा समारोहो में सरेआम उनसे कोई असहमति जताए।

—महाश्वेता देवी

हिन्दी भाषा नहीं, संस्कृति है

हिन्दी शब्द का उद्‌गम ही हमारी समन्वित होती संस्कृति का प्रतीक है, क्योंकि हिन्द शब्द ही विजातीय है। इसी हिन्द शब्द से हिन्दू, हिन्दुई और हिन्दवी बना है और हिन्दवी भाषा उत्तर भारत की कौरवी-खड़ी बोली, और सेनी-ब्रज, हरियाणवी, लाहौरी, बांगड़ और फारसी के मिश्रण से बनी। यही खिलजी सुल्तानों के साथ दक्षिण में गई और दक्खिनी कहलाई। इस हिन्दवी-हिन्दी के पहले साहित्यिक कवि अमीर खुसरो थे। पुरानी हिन्दी-हिन्दवी के भाषाई लक्षण चाहे सिद्धों और नाथ सम्प्रदाय के कनफटे साधुओं के जमाने से मिलते हों, परन्तु हिन्दी की शब्द-सम्पदा का विकास अपनी स्थानीय मातृ-बोलियों और फारसी के संसर्ग से ही हुआ। उस फारसी के संसर्ग से, जो आर्यकुल की भाषा तो थी परन्तु इस्लाम की आँधी के बादवह स्वयं अरबी और तुर्की भाषाओं के सम्मिश्रण से बनी। तेरहवीं सदी से सत्रहवीं सदी तक यह हिन्दी दक्षिण में दक्खिनी के रूप में पलती रही। यह तथ्य भी लोगों को चौंका सकता है कि आर्यभाषा हिन्दी, अब तक प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर, पहले-पहल फारसी लिपि में लिखी गई। महाराष्ट्र के एकनाथ और नामदेव जैसे कवियों ने इसी देशज हिन्दी को अपनाया और इन्हीं के भक्तों ने दक्षिण में हिन्दी को पहली बार नागरी लिपि में लिपिबद्ध किया। यही असली हिन्दी है, जिसने समन्वित होती संस्कृति की कोख में जन्म लिया था। **—कमलेश्वर**

जनकवि नागार्जुन

नवम्बर, 1954, नागार्जुन दिल्ली में हरिवंशराय बच्चन से मिलने पहुँच गए। बहुत देर तक बातों का क्रम समाप्त नहीं हुआ, साम्यवादी विचारों के सन्दर्भ में साहित्यकारों की भूमिका को लेकर बहस छिड़ी थी। शाम होने लगी, कोई निष्कर्ष नहीं निकल रहा था। प्राय: शान्त दिखने वाले बच्चनजी उस दिन मानो सब कुछ स्पष्ट कर देना चाहते थे। वह जानते थे कि उनके विचार नागार्जुन के माध्यम से बिहार और उत्तर प्रदेश में जाएँगे। टहलते हुए वे एक काफी हाउस में बैठ गए। बस फिर क्या था, नागार्जुन बच्चनजी के पक्ष में बोलने लगे। बच्चनजी ने कहा, ''मुझे क्या पता था कि काफी में इतना दम है।'' दोनों ठहाका लगाकर देर तक हँसते रहे। **—डॉ० राघवेन्द्र शुक्ल**

अत्र-तत्र-सर्वत्र

संत कबीर की 610वीं जयन्ती के अवसर पर साधना स्थली का नया स्वरूप

वाराणसी में कबीरचौरा स्थित कबीरमठ में संत विवेकदास कबीरदास की 610वीं जयन्ती के अवसर पर जीवन का साक्षात्कार, शिल्प, संग्रहालय, जीवन एवं सिद्धान्तों पर आधारित फिल्म, वीडियो एलबम व संगीत के माध्यम से कराने का प्रयास कर रहे हैं। मठ में अनेक प्रकार के भित्ति चित्र भी लगाये गये हैं जिसमें कबीर को शिशु से लेकर संत बनने तक की यात्रा को दर्शाया गया है। उपर्युक्त चित्र मठ में प्रदर्शित अनेक शिल्प में से एक है।

रूसी कवि निकोलाई तीखोनोव का भारतीय प्रेम

अमरसिंह वधान

भारत के विषय पर लिखने वाले सोवियत लेखकों में निकोलाई तीखोनोव को प्रथम स्थान प्राप्त है। एक बार उन्होंने कहा था—'मैं दिल से पूर्वी आदमी हूँ।' अपनी एक प्रारम्भिक कविता 'भारत' में, जो 1913 में छपी थी, उन्होंने खेतों-मैदानों के सौन्दर्य के बीच नीली रातों का आनन्द लेने का सपना देखा था और प्राचीन काल के पवित्र पत्थरों पर चलने की कामना की थी। लेकिन युवा कवि उस समय भी भारत को घेरे हुए रूमानियत के कुहासे के बीच से भारतीय जनता के वास्तविक जीवन को, जो दु:ख, पीड़ा, कष्टों, संघर्ष और आशाओं से भरा पड़ा था, देख पाया था। इस सम्बन्ध में तीखोनोव की अप्रकाशित कविता 'नरहत्या' (1914) महत्त्वपूर्ण है, जिसे उन्होंने रूसी चित्रकार वेरेश्चागिन के 'ब्रिटिश इण्डिया में तोपों से मृत्युदण्ड' शीर्षक चित्र को देखने के बाद लिखा था। वेरेश्चागिन ने यह चित्र पिछली सदी के नौंवे दशक के प्रारम्भ में अंग्रेजों द्वारा नामधारी सिख की हत्या के सिलसिले में बनाया था।

तोप के मुँह से बँधा भारतीय युवक अपना ईमान बेचने के बजाय मरना स्वीकार करता है। अंग्रेज अफसर उसे ब्रिटिश मुकुट के सामने सिर झुकाकर अपनी जान बचाने को कहता है। लेकिन जवाब में वब निर्डरतापूर्वक कहता है—

भारत माता के लिए जूझा मैं, साहब।
भीषण युद्ध में नहीं डगमगाया मैं, साहब।
डूबते सूरज से ज्यों लाल होता गगन,
ऐसे ही मर मिटूँगा मैं, साहब।

तीखोनोव की यह कविता उन हज़ारों भारतीय शहीदों की याद दिलाती है, जिनके बारे में भारत के कवियों ने असंख्य कविताएँ और गीत रचे हैं।

बच्चों के लेखक और पत्रकार बनने के गुर

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद एनसीईआरटी ऐसे स्कूली पाठ्यक्रम बनाने की तैयारी कर रहा है जिससे बच्चे सृजनात्मक लेखन और अनुवाद कला में सिद्धहस्त हो सकें। परिषद ने इसके लिए सुप्रसिद्ध संस्कृति कर्मी अशोक वाजपेयी की अध्यक्षता में एक समिति गठित की है। श्री वाजपेयी के अनुसार ग्यारहवीं तथा 12वीं कक्षा के छात्रों के लिए एक ऐसा पाठ्यक्रम तैयार किया जा रहा है जिसमें छात्र न केवल अनुवाद, कला बल्कि सृजनात्मक लेखन भी सीख सकें। इस पाठयक्रम में बच्चे कविता, कहानी, नाटक आदि लिखना सीखेंगे साथ ही मीडिया लेखन भी सीखेंगे। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक एवं रंगकर्मी (समीक्षक देवेन्द्र राज अंकुर) जाने-माने कला समीक्षक प्रयाग शुक्ल, साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता एवं पटना विश्वविद्यालय में प्रोफेसर अरुण कमल, दिल्ली विश्वविद्यालय की रीडर डॉक्टर अनामिका और भारतीय जनसंचार संस्थान के व्याख्याता आनन्द प्रधान, जाकिर हुसैन कॉलेज की अनुराधा मारवाहा समिति की सदस्य हैं।

अनेक पाठ्यक्रमों में छात्र नहीं

उच्च शिक्षा पूरी तरह उपयोगिता तथा अर्थ से जुड़ गई है। जिस विषय के अध्ययन की उपयोगिता केवल ज्ञान के लिए है, व्यावहारिक जीवन में नहीं, उसमें छात्र प्रवेश नहीं ले रहे हैं। यदि ऐसी स्थिति रही तो विश्वविद्यालयों में ऐसे विषयों का अध्यापन बन्द कर देना होगा। आज ज्ञान का भी मोल है, जो ज्ञान अर्थकरी न हो उसकी उपयोगिता क्या?

सर्व विद्या की राजधानी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के छह पाठ्यक्रमों में एक भी छात्र ने आवेदन नहीं किया। रसिया, मराठी, कन्नड़, तेलुगू, पाटरी एवं सिरामिक्स में भी आवेदक नहीं। चाइनीज़, पर्सियन में एक-एक छात्र ने रुचि ली। अन्य विषयों में बमुश्किल 5-6 छात्रों ने आवेदन किया। संस्कृत साहित्य, धर्मदर्शन में घटती छात्रों की संख्या चिन्ता का विषय है। लोगों का कहना है कि इसे आधुनिक विषयों से जोड़ने की आवश्यकता है और सरकार को इन अध्येताओं को नौकरी भी सुलभ करानी होगी।

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ में भी ऐसी ही स्थिति है। 21 पाठ्यक्रमों में किसी छात्र ने आवेदन नहीं किया। 22 पाठ्यक्रमों में 10 से भी कम आवेदन आये हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने अध्ययन की उपयोगिता अर्थात् अर्थकरी दृष्टि से देखता है। यदि यही दृष्टि रही तो शनै:-शनै: कला, दर्शन, संस्कृति का लोप होता जायगा।

मातृभाषा हिन्दी

मातृभाषा हिन्दी हमें देश से, अंग्रेजी विश्व से तथा संस्कृत पूरे ब्रह्माण्ड से जोड़ती है। बच्चों को अन्य भाषाओं के साथ-साथ संस्कृत भाषा का भी अध्ययन करना चाहिए।

—डॉ० मुरलीमनोहर जोशी

सिविल सेवाओं में हिन्दी

सिविल सेवा परीक्षा में माध्यम के तौर पर भारतीय भाषाओं का प्रवेश 1980 के आसपास शुरू हो गया था, लेकिन हिन्दी माध्यम से उत्तीर्ण होने वालों की संख्या में इजाफा हाल के वर्षों में शुरू हुआ है। यह एक तरह से अति विलंबित घटना है, जिसे बहुत पहले हो जाना चाहिए था। मैं इसे सिविल सेवाओं के लोकतंत्रीकरण के रूप में देखता हूँ।

सिविल सेवाओं में हिन्दीभाषियों के आने की इस प्रवृत्ति के तीन फायदे हैं : पहला यह कि इससे निश्चय ही भारतीय नौकरशाही का वर्ग चरित्र बदलेगा। पहले केवल उच्च वर्ग के लोग ही सिविल सेवाओं में आ पाते थे, अब निम्न और निम्न मध्य वर्ग के युवा भी आ रहे हैं। देश की सम्पूर्ण आबादी के बीच से आई प्रतिभाओं को यदि राष्ट्र निर्माण में योगदान करने का अवसर मिले, तो इसका स्वागत होना ही चाहिए। इस तरह से हर वर्ग भागीदार बनता है। दूसरा, इसके जरिये लोकभाषाओं की प्रतिष्ठा भी होती है। इससे लोकतंत्र सच्चे अर्थों में लोक तक पहुँचता है। वह लोक के बीच घुसता है।

सिविल सेवा में ग्रामीण और देहाती पृष्ठभूमि के युवाओं के आने की एक वजह यह भी लगती है कि अब इसके प्रति शहरी अभिजात्य वर्ग के युवाओं में वह क्रेज नहीं रह गया है, जो हमारे जमाने में हुआ करता था। निजी क्षेत्र के वेतन और सुविधाएँ आज अकल्पनीय तरीके से बढ़ी हैं। नौकरशाहों को जैसे लोगों के साथ, जिन परिस्थितियों में काम करना पड़ता है, उनके चलते अब प्रथम श्रेणी के युवा इनमें नहीं आते।

—अशोक वाजपेयी

अखबार पढ़ने वालों की संख्या बढ़ रही

पूरी दुनिया में अखबार पढ़ने वालों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। भारत के लोग भी अखबार पढ़ने वालों में कहीं पीछे नहीं हैं। 2006 के आँकड़ों के अनुसार भारत में अखबारों की बिक्री 12.93 फीसदी बढ़ी है। पिछले पाँच साल

के दौरान ग्राहकों की संख्या दोगुनी से भी ज्यादा (53.36 फीसदी) बढ़ी है। इतनी ही नहीं, भारत का स्थान सर्कुलेशन के लिहाज से विश्व में दूसरा है। यहाँ 8.89 करोड़ अखबार रोज बिकते हैं। भारत से अधिक अखबार सिर्फ चीन में (9.87 करोड़) बिकते हैं।

2006 में प्रतिदिन 515 करोड़ लोग अखबार खरीदते थे। 2002 में यह संख्या 488 करोड़ थी। विश्व के सर्वाधिक बिकने वाले दस अखबारों में सात एशिया से निकलते हैं।

महादेवी वर्मा शताब्दी समारोह

गुजरात विद्यापीठ के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित महादेवी वर्मा शताब्दी समारोह में प्रो० मालती दुबे, डॉ० सुधा श्रीवास्तव, डॉ० रामगोपाल सिंह ने महादेवीजी के कृतित्व की चर्चा करते हुए अपने उद्‌गार व्यक्त किये। अन्त में मैथिलीशरणजी गुप्त की इन पंक्तियों से श्रद्धा सुमन अर्पित किया—

सहज भिन्न दो महादेवियाँ एक रूप में मिली मुझे।
बता बहिन! साहित्य शारदा या काव्यश्री कहूँ तुझे।

गंगा-जमुनी संस्कृति की प्रतीक डॉ० नाहीद आबिदी

काशी सर्वधर्म समवाय की नगरी है। यहाँ विश्व के प्रमुख धर्मों की अनुभूति की जाती है। धर्म विश्व ज्ञान को प्रभावित करता है। मुस्लिम शासनकाल में दाराशिकोह ने काशी में संस्कृत की शिक्षा ग्रहण की। आगे चलकर अरबी भाषा में उपनिषद लिखा। दारानगर उसी की स्मृति है।

ज्ञान विशुद्ध ज्ञान है। इसमें भाषा, जाति, धर्म बाधक नहीं होता। आज भूमण्डलीकरण के इस युग में विश्व के विविध ज्ञान का परस्पर आदान-प्रदान हो रहा है। काशी में ज्ञान साम्प्रदायिकता के बन्धन तोड़कर गंगा-जमुनी संस्कृति को दिन-प्रतिदिन और दृढ़ता प्रदान कर रहा है। संकटमोचन पर हुए आतंकवादी हमले ने इसे सुदृढ़ किया।

एक ओर जहाँ मुस्लिम स्त्री-पुरुष संस्कृत पढ़ते हुए वेद-पुराण का अध्ययन कर रहे हैं, वहीं हिन्दू छात्र-छात्राएँ मुस्लिम मदरसों में कुरान का भी अध्ययन कर रहे हैं। डॉ० नाहीद आबिदी ने संस्कृत (वेद) में पी-एच०डी० किया। संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ में अध्यापन कर रही हैं। संस्कृत में लेख और पद्यानुवाद करती हैं। उनकी पुस्तक **संस्कृत साहित्य में रहीम** का प्रकाशन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम् ने किया है। शायद कुछ ही लोगों को ज्ञात हो कि रहीम संस्कृत के भी विद्वान थे। राष्ट्रपति ने इस कृति के लिए डॉ० नाहीद को बधाई दी।

उनका उद्देश्य हिन्दू धर्म के बारे में मुस्लिम साहित्यकारों की रचनाओं से नई पीढ़ी को परिचित कराना है। संस्कृत के साथ ही उर्दू, फारसी, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा पर भी उनका समान अधिकार है। आब्दी कहती हैं कि रहीम ने गंगा की स्तुति में जो आठ रचनाएँ की हैं वैसी तो शायद ही किसी हिन्दू ने लिखी हों। वेदों के अध्ययन को लेकर कई बार उन्हें दकियानूसी मुसलमानों के ताने भी सुनने पड़े, लेकिन अब उनके मजहब के लोग भी इसे स्वीकारने लगे हैं। शादी के पहले पिता मरहूम सैयद मोहिब रजा आब्दी और शादी के बाद पति एहतेशाम आब्दी ने संस्कृत अध्ययन के लिए उन्हें न सिर्फ प्रोत्साहित किया, बल्कि हरसंभव सहायता भी की। उनके पति जाने-माने अधिवक्ता हैं। डॉ० नाहिद आब्दी को उनके प्रयासों के लिए केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह से लेकर कई हस्तियाँ सम्मानित कर चुकी हैं।

राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने डॉ० नाहीद आबिदी के 6 जून 2007 को राष्ट्रपति भवन आमंत्रित किया और काफी समय तक वेदों की चर्चा करते रहे। उन्होंने मिर्जा गालिब की प्रसिद्ध रचना 'मसनवी चरागे दैर' के संस्कृत अनुवाद में रुचि दिखाई। उन्होंने नाहीद को प्रोत्साहित करते हुए साहित्य सेवा में लगे रहने को प्रेरित किया।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में वेद-वेदांग और संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त बौद्ध, जैन तथा भागवत धर्म के पढ़ने वाले मुसलमान छात्रों की निरन्तरता बनी हुई है।

एक समय था जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्त्रियों को वेद पढ़ना वर्जित था। विश्वविद्यालय के अरबी-फारसी के अध्यापक मौलवी महेश प्रसाद जो आर्य समाजी थे अपनी पुत्री का वेद अध्ययन के लिए प्रवेश नहीं करा सके थे। बाद में बड़ी कठिनाई से अनुमति मिली।

पटना में एक नौ वर्ष की हिन्दू लड़की हेमलता कुरान पढ़ रही है, एक पारायण भी कर लिया है। अत: ज्ञान धर्म, सम्प्रदाय से परे होता है।

ज्ञान विश्व को, समाज को, देश को एक-दूसरे से जोड़ता है। इस उदार भाव का सृजन एक शुभ संकेत है।

व्यक्तित्व विकास के लिए प्रतिदिन डायरी लिखिए

प्रतिदिन मनुष्य अनेक प्रकार के कार्य करता है, लोगों के सम्पर्क में आता है, अनुभव प्राप्त होता है। इन सबका आत्म सर्वेक्षण कर आत्मचिंतन करें और केवल 15 मिनट के अल्प समय में कुछ पंक्तियाँ डायरी में अंकित करें। यह आपके जीवन की अर्जित पूँजी होगी, जिसे आप घर, परिवार, समाज में बाँट सकेंगे।

पुस्तक संस्कृति और समय से संघर्ष

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर भोपाल में दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय में कमलेश्वर की स्मृति में कमलेश्वर पुस्तक केन्द्र का उद्‌घाटन महापौर श्री सुनील सूद ने किया। जनसम्पर्क आयुक्त श्री मनोज श्रीवास्तव ने 'पुस्तक संस्कृति—समय से संघर्ष' के सन्दर्भ में कहा—पुस्तक संस्कृति को खत्म होने से बचाने के लिए हमें व्यावहारिक रूप में किसी न किसी तरीके से पुस्तकों के करीब रहना चाहिए। उनका सुझाव था कि आयोजनों में मालाओं की जगह पुस्तक भेंट कर स्वागत किया जाय। पुस्तकें अनन्त सम्भावनाओं का द्वार है। इस पुस्तक संस्कृति को वर्तमान समय में बहुत ही व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। पुस्तक की एक लड़ाई मीडिया की नई टेक्नालजी से भी है। पुस्तक सृजन का सशक्त माध्यम है जबकि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया उसका पुन: सृजन करता है। इसलिए पुस्तक की रचनात्मक और सृजनात्मक उपादेयता इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से अधिक है।

संग्रहालय निदेशक राजुरकर राज ने आश्वस्त किया कि भविष्य में भी इसी प्रकार रचनात्मक एवं सार्थक कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

नये केन्द्रीय विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग देश के 16 राज्यों—अरुणाचल, बिहार, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, झारखण्ड, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तरांचल, अण्डमान निकोबार, चण्डीगढ़, जामनद्वीप, दादर नगर हवेली और लक्षद्वीप में केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोलेगा। शिक्षक रूप से पिछड़े 355 जिलों में राज्यों के सहयोग से आयोग ने कॉलेज खोलने का प्रस्ताव किया है। प्रतिवर्ष उच्च शिक्षा ग्रहण करने वालों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है।

शोधार्थी बढ़े

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्वविद्यालयों में अध्यापन के अभ्यर्थियों के लिए परीक्षा की अनिवार्यता समाप्त कर रही है। अत: शोधार्थियों की संख्या बढ़ती जा रही है। इतनी बड़ी संख्या में शोधार्थी क्या शोध के स्तर को बनाये रख सकेंगे? क्या शोध के लिए पुस्तकालय तथा अन्य साधन सुलभ और समृद्ध हैं? यदि इसकी व्यवस्था नहीं की गई तो शोध का स्तर गिरेगा। शोधार्थी को नये अछूते विषयों पर शोध करना चाहिए, न कि पूर्व में हुए शोध की पुनरावृत्ति की जाय।

प्राचीन पाण्डुलिपि

प्राचीन पाण्डुलिपियों में विभिन्न विषयों के पारम्परिक ज्ञान लिपिबद्ध हैं जिनसे आज की पीढ़ी अनभिज्ञ है। अत: पाण्डुलिपियों को पढ़ने की जरूरत है। पाण्डुलिपियों को पढ़ने के लिए लिपि, भाषा व विषय का ज्ञान अनिवार्य है, तभी पाण्डुलिपियों को ठीक से पढ़ा जा सकता है। आज विश्वविद्यालयों में पाण्डुलिपि विज्ञान व लिपि विज्ञान के पाठ्यक्रमों को स्थापित करने की जरूरत है, जिससे नई पीढ़ी पारम्परिक ज्ञान से अवगत हो

विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी-221001

प्रमुख पाठ्य-ग्रन्थ

इतिहास, कला और संस्कृति

भारतीय संस्कृति के मूलतत्व *राष्ट्रिय पण्डित श्री ब्रजवल्लभ द्विवेदी* 60.00
एक विश्व एक संस्कृति ,, 150.00
शिव काशी *डॉ० प्रतिभा सिंह* 400.00
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650.00
काशी की पाण्डित्य-परम्परा *पं० बलदेव उपाध्याय* 600.00
काशी के घाट : कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन *डॉ० हरिशंकर* 300.00
शिव काशी *डॉ० प्रतिभा सिंह* 400.00
Ancient Indian Administration & Penology *Paripurnanand Varma* 300.00
Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200.00
Life in Ancient India *Dr. Mahendra Pratap Singh* 100.00
प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति सजिल्द 250.00
प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर अजिल्द 125.00
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा *डॉ० लल्लनजी गोपाल* 150.00
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला *डॉ० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी, डॉ० कमल गिरि* 150.00
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण (7वीं शती से 13वीं शती) ,, 325.00
प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान एवं मूर्ति-कला सजि. 320.00, *डॉ० ब्रजभूषण श्रीवास्तव* अजि. 220.00
भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क सजिल्द 400.00
डॉ० आर० गणेशन अजिल्द 250.00
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ *डॉ० श्रीराम गोयल* 50.00
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ सजिल्द 250.00
डॉ० श्रीराम गोयल अजिल्द 120.00
ग्रीक-भारतीय (अथवा यवन) *प्रो० ए०के० नारायण* 300.00
दक्षिण-पूर्व एशिया *डॉ० शैलेन्द्रप्रसाद पांथरी* 30.00
प्राचीन भारत *डॉ० राजबली पाण्डेय* सजि. 300.00, अजिल्द 180.00
गुप्त साम्राज्य *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* सजि. 450.00, अजिल्द 250.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-1) सजिल्द 150.00
डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त अजिल्द 100.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-2) सजिल्द 120.00
डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त अजिल्द 80.00
भारत के पूर्व-कालिक सिक्के सजिल्द 275.00
डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त अजिल्द 170.00
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ ,, 60.00
भारतीय वास्तुकला *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 120.00
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ सजि. 100.00
डॉ० ओंकारनाथ सिंह अजिल्द 70.00
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु सजिल्द 650.00
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल अजिल्द 550.00
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु ,, 200.00
शुंगकालीन भारत *सच्चिदानन्द त्रिपाठी* 50.00
बौद्ध तथा जैनधर्म (धम्मपद और उत्तराध्ययन सूत्र का तुलनात्मक अध्ययन) *डॉ० महेन्द्रनाथ* 180.00
बौद्ध तथा जैन-धर्म तथा दर्शन *डॉ० सत्यनारायण दूबे 'शरतेन्दु'* 90.00
प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ सजि. 250.00, *डॉ० नीहारिका* अजि. 150.00
इतिहास दर्शन *डॉ० झारखण्डे चौबे* सजिल्द 300.00, अजिल्द 150.00
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा *डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल* 120.00
दिल्ली सल्तनत *डॉ० गणेशप्रसाद बरनवाल* सजिल्द 80.00, अजिल्द 50.00
सल्तनतकालीन सरकार तथा प्रशासनिक व्यवस्था *डॉ० ऊषारानी बंसल* 50.00
मुगलकालीन सरकार तथा प्रशासनिक संरचना *डॉ० ऊषारानी बंसल* 100.00
भारतीय मुसलमान *डॉ० किशोरीशरणलाल* 60.00
मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन (1220-1445) *डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव* 80.00

समाजशास्त्र, धर्म तथा दर्शन

समाजदर्शन की भूमिका *डॉ० जगदीशसहाय श्रीवास्तव* 150.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00
बौद्ध तथा जैनधर्म *डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह* 180.00
बौद्ध एवं जैन-धर्म तथा दर्शन *डॉ० सत्यनारायण दूबे 'शरतेन्दु'* 90.00
वेद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180.00
मनोविज्ञान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य *डॉ० (श्रीमती) गायत्री* 150.00
भारत में जातिप्रथा और दलित ब्राह्मणवाद *बच्चन सिंह* 180.00
सिख धर्म और संस्कृति *डॉ० अमरसिंह वधान* 120.00
गांधीवाद : विविध आयाम *डॉ० सतीश कुमार* 120.00
जनोपनिषद *भरत गाँधी* 200.00
धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० वसुन्धरा मिश्र* 250.00
दर्शन, धर्म तथा समाज *राजाराम शास्त्री* 350.00
भारतीय समाज और संस्कृति *सम्पा. : डॉ० कृष्णदत्त द्विवेदी* 80.00
भारतीय समाज एवं संस्कृति : परिवर्तन की चुनौती *सम्पा. : सत्यप्रकाश मित्तल* 380.00
अपराध के नये आयाम तथा पुलिस की समस्याएँ *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 50.00

शिक्षा

Advanced Educational Psychology *Dr. K.P. Pandey* (H.B.) 400.00, (P.B.) 250.00
Fundamentals of Educational Research *Dr. K.P. Pandey* (H.B.) 450.00, (P.B.) 250.00
Educational and Vocational Guidance in India (H.B.) 300.00, *Dr. K.P. Pandey* (P.B.) 150.00
Teaching of English in India (H.B.) 300.00, *Dr. K.P. Pandey* (P.B.) 150.00
नवीन शिक्षा मनोविज्ञान सजिल्द 250.00
डॉ० के०पी० पाण्डेय अजिल्द 150.00
शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार *डॉ० के०पी० पाण्डेय* सजिल्द 250.00, अजिल्द 150.00
पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 150.00
शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी ,, 150.00
शैक्षिक अनुसंधान *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 100.00
Educational Philosophy of W.H. Kilpatrick *Dr. Pratibha Khanna* 300.00
Parental Awareness & Achievement of the Students *Shailja Singh* 150.00
शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम *डॉ० राजेश्वर उपाध्याय* अजिल्द 80.00, *डॉ० सरला पाण्डेय*
संसार के महान शिक्षाशास्त्री *डॉ० इन्द्रा ग्रोवर* 60.00
महान् शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त *आर०आर० रस्क* 80.00

राजनीति-विज्ञान

गाँधीवाद : विविध आयाम *डॉ० सतीशकुमार* 120.00
भारत की चुनावी राजनीति के बदलते आयाम *डॉ० ओमप्रकाश राय* 400.00
अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध *डॉ० नलिनी पंत* सजि. 80.00, अजि. 50.00
Daishik Shastra (Bhartiya Polity) *Badrishah Thulgharia* 250.00
Theory of Rights (Green, Bosanquet Spencer and Laski) *Dr. Nalini Pant* 100.00
उदारवाद और गोपालकृष्ण गोखले *डॉ० सतीशकुमार* 60.00
भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन *डॉ० राजेन्द्रप्रसाद सिंह* 30.00

अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य

सेविवर्गीय प्रबन्ध एवं औद्योगिक सम्बन्ध *डॉ० जगदीशसरन माथुर* 160.00

Corporate Finance : Some Issues
Dr. V.S. Singh 250.00
अर्थशास्त्र मौखिकी *डॉ० सुशीलकिशोर श्रीवा०* 60.00

पत्रकारिता, जनसंचार, सिनेमा

जनसंचार : सिद्धान्त एवं भाषा विमर्श
डॉ० अवधेशनारायण मिश्र राजेशनारायण द्विवेदी 250.00
जनसम्पर्क : सिद्धान्त और व्यववहार
डॉ० अर्जुन तिवारी, विमलेश तिवारी 280.00
सम्प्रेषण और रेडियो शिल्प *विश्वनाथ पाण्डेय* 250.00
रेडियो का कला पक्ष *डॉ० नीरजा माधव* सजि. 80.00
अजि. 40.00
सम्पूर्ण पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* अजि. 280.00
सजि. 400.00
आधुनिक पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* सजिल्द 250.00, अजिल्द 150.00
हिन्दी पत्रकारिता *डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह* सजि. 100.00
(भारतेन्दु पूर्व से छायावादोत्तर काल तक) अजि. 50.00
इतिहास निर्माता पत्रकार *डॉ० अर्जुन तिवारी* 60.00
संसद और संवाददाता
ललितेश्वरप्रसाद सिंह श्रीवास्तव 150.00
हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप
डॉ० बच्चन सिंह पत्रकार 200.00
पत्र, पत्रकार और सरकार
काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर 120.00
समाचार और संवाददाता ,, 80.00
प्रेस विधि *डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा* सजिल्द 150.00
अजिल्द 100.00
संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता सजि. 300.00
डॉ० अशोककुमार शर्मा अजिल्द 200.00
संवाद संकलन विज्ञान *नारायण व्यंकटेश दामले* 50.00
The Rise and Growth of Hindi Journalism *Dr. R.R. Bhatnagar Ed. by Dr. Dhirendra Singh* 800.00
Mass Communication & Development *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00
Journalism by Old and New Masters *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00
Modern Journalism & Mass Communication *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00

सङ्गीत

चैती *डॉ० शान्ति जैन* 120.00
कर्नाटक संगीत पद्धति
डॉ० आर०वी० कविमण्डन 120.00
भारतीय सङ्गीत का इतिहास सजि. 300.00
डॉ० ठाकुर जयदेव सिंह अजि. 150.00
भारतीय सङ्गीतशास्त्र का दर्शनपरक अनुशीलन *डॉ० विमला मुसलगाँवकर* 400.00
Indian Music *Dr. Thakur Jaideva Singh* 450.00

संस्कृत व्याकरण, रचना तथा भाषाशास्त्र

रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 50.00
प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी ,, 20.00
संस्कृत-शिक्षा (भाग 1, 2, 3) ,, 39.00
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी (सम्पूर्ण) सजिल्द 300.00
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी अजिल्द 200.00
संस्कृत-निबन्ध-शतकम् ,, 80.00
अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन ,, 400.00
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र सजिल्द 250.00
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी अजिल्द 120.00
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० भोलाशंकर व्यास 80.00
भाषा विज्ञान (बी०ए० के लिए)
डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी 30.00
लघुसिद्धान्तकौमुदी (समास एवं विभक्त्यर्थ प्रकरण) *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 20.00
लघुसिद्धान्तकौमुदी (संज्ञा एवं सन्धि प्रकरण) *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी व भारतेन्दु द्विवेदी* 20.00
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति सजिल्द 250.00
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी अजिल्द 125.00
लघुसिद्धान्तकौमुदी *डॉ० मुरलीधर पाण्डेय* 30.00
लघुसिद्धान्तकौमुदी *डॉ० रामअवध पाण्डेय व डॉ० रविनाथ मिश्र* 40.00
बालसिद्धान्तकौमुदी *ज्योतिस्वरूप मिश्र* 50.00
सिद्धान्त-कौमुदी (कारक प्रकरणम्)
ज्योतिस्वरूप मिश्र, उर्मिला मोदी 20.00
पाणिनीय शिक्षा ('प्रभावती' व्याख्या संवलिता) *डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय* 24.00

रस, अलंकार साहित्यशास्त्र समीक्षा तथा दर्शन

रसों की संख्या *डॉ० वी० राघवन,* सजि. 300.00
अनुवाद : अभिराज राजेन्द्र मिश्र 200.00
भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य-परम्परा *राधावल्लभ त्रिपाठी* 180.00
संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास *आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी* 500.00
भामिनी विलास का प्रस्ताविक-अन्योक्तिविलास (सटीक) *सं० पण्डित जनार्दन शास्त्री* 50.00
चन्द्रालोक-सुधा एवं छन्दोमञ्जरी-सुधा *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 25.00
ध्वन्यालोक (दीपशिखा टीका सहित पूर्ण तथा संशोधित परिवर्धित)
आचार्य चण्डिकाप्रसाद शुक्ल 200.00
अलङ्कार-दर्पण (साहित्य-दर्पण दशम् परिच्छेद एवं छन्दोमञ्जरी)
डॉ० जनार्दन गङ्गाधर रटाटे 15.00
अभिनव रस सिद्धान्त *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 40.00
वक्रोक्तिजीवितम् *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 100.00
रसाभिव्यक्ति *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 150.00
चन्द्रालोक (1 से 4 मयूख)
डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी 40.00
दशरूपकम् *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 150.00
मृच्छकटिक : शास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन *डॉ० शालिग्राम द्विवेदी* 100.00
संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक
डॉ० आशारानी त्रिपाठी 225.00
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास सजि. 350.00
डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी अजिल्द 200.00
संस्कृत साहित्य की कहानी *उर्मिला मोदी* 50.00
भारतीय दर्शन का सुगम परिचय
डॉ० शिवशंकर गुप्त 80.00
भारतीय दर्शन : सामान्य परिचय
डॉ० व्रजवल्लभ द्विवेदी 60.00
भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व ,, 60.00

वैदिक-साहित्य

वेद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180.00
वेदचयनम् *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 60.00
ऋङ्मणिमाला *डॉ० हरिदत्त शास्त्री* 45.00
ऋग्वेदभाष्यभूमिका *डॉ० हरिदत्त शास्त्री* 40.00
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति सजिल्द 250.00
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी अजिल्द 125.00

पालि-प्राकृत-अपभ्रंश

पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-संग्रह
डॉ० रामअवध पाण्डेय तथा डॉ० रविनाथ मिश्र 80.00
पालि-साहित्य का इतिहास
डॉ० कोमलचन्द्र जैन 25.00
पालि-दर्पण
डॉ० मूलशंकर शर्मा, डॉ० कैलाश मिश्र 16.00

संस्कृत-साहित्य (मूल ग्रन्थ, समीक्षा सहित)

शांकरवेदान्ते तत्व-मीमांसा
डॉ० के०पी० सिन्हा 40.00
शृङ्गारमञ्जरी सट्टकम् (श्रीमद्विश्वेश्वर)
सं० बाबूलाल शुक्ल 20.00
मुद्राराक्षसम् *सं० डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 100.00
शिशपालवधम् (प्रथम सर्गः)
डॉ० जनार्दन गंगाधर रटाटे 24.00
किरातार्जुनीयम (प्रथम सर्गः) *भारवि रचित* 18.00
कादम्बरी : कथामुखम्
डॉ० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी 40.00
उत्तररामचरितम् *डॉ० रामअवध पाण्डेय* 120.00
कठोपनिषद (प्रथम अध्याय)
डॉ० रविनाथ मिश्र 15.00
मेघदूतम् (कालिदास) *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 50.00
दशरूपकम् *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 150.00
अभिज्ञानशाकुन्तलम् *सं० डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80.00
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 2-3) ,, 25.00
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 9) ,, 12.00
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 9)
डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी 9.00
कुमारसंभवम् (प्रथमः सर्ग) ,, 20.00
तर्क-संग्रहः *डॉ० शिवशंकर गुप्त* 30.00
मनुस्मृति (द्वितीय अध्याय) 'तत्त्व-बोधिनी' *डॉ० शिवशंकर गुप्त* 40.00
नलोपाख्यानम् (वेदव्यास) *गंगासहाय 'प्रेमी'* 40.00

तैत्तिरीय प्रातिशाख्यम्
डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय 20.00

साहित्य शास्त्र

नया काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 180.00
काव्य रस : चिन्तन और आस्वाद '' 50.00
काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* सजिल्द 180.00
अजिल्द 100.00
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास सिद्धान्त और वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* सजिल्द, 150.00 अजिल्द 70.00
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र
डॉ० अर्चना श्रीवास्तव 65.00
भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य-परम्परा *डॉ० भगीरथ मिश्र* 180.00
अभिनव का रस-विवेचन
नगीनदास पारेख तथा डॉ० प्रेमस्वरूप गुप्त 100.00
शब्द-शक्ति-विवेचन *डॉ० रामलखन शुक्ल* 40.00
पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिन्दी पर उसका प्रभाव *डॉ० रवीन्द्रसहाय वर्मा* 40.00
जनवादी समझ और साहित्य
डॉ० रामनारायण शुक्ल 50.00
यथार्थवाद : पुनर्मूल्यांकन *डॉ० अजब सिंह* 100.00

भाषाशास्त्र तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी

हिन्दी भाषा, व्याकरण और रचना
डॉ० अर्जुन तिवारी 150.00
हिन्दी-भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास
डॉ० सत्यनारायण त्रिपाठी 90.00
प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार *रघुनन्दनप्रसाद शर्मा* 180.00
कार्यालयीय हिन्दी *डॉ० विजयपाल सिंह* 50.00
प्रामाणिक व्याकरण एवं रचना
डॉ० विजयपाल सिंह 65.00
हिन्दी भाषा, साहित्य और नागरी लिपि
डॉ० कन्हैया सिंह 40.00
व्यावहारिक और प्रयोजनमूलक हिन्दी
डॉ० अर्चना श्रीवास्तव 40.00
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र सजिल्द 250.00
डॉ० कपिलदेव द्विवदी अजिल्द 120.00
लिपि, वर्तनी और भाषा सजिल्द 30.00
डॉ० बदरीनाथ कपूर 20.00
हिन्दी व्याकरण की सरल पद्धति सजिल्द 40.00
डॉ० बदरीनाथ कपूर अजिल्द 25.00
हिन्दी वातायन *डॉ० के०एम० चन्द्रमोहन* 20.00
पूर्वी अपभ्रंश भाषा *डॉ० राधाकान्त मिश्र* 80.00
हिन्दी का सांस्कृतिक परिवेश
डॉ० लालजी सिंह 50.00
कोश-विज्ञान : सिद्धान्त और प्रयोग
डॉ० हरदेव बाहरी 100.00
हिन्दी में अनेकार्थता का तुलनात्मक अध्ययन *डॉ० त्रिभुवन ओझा* 100.00
कबीर बीजक का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० शुकदेव सिंह 80.00
समसामयिक निबन्ध *डॉ० देवव्रत* 20.00
नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश
डॉ० बदरीनाथ कपूर 200.00

गद्य साहित्य समीक्षा

हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना संदर्भ सजि. 200.00
डॉ० रामचद्र तिवारी अजिल्द 120.00
कृति चिन्तन और मूल्यांकन सन्दर्भ
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 200.00
हिन्दी का गद्य साहित्य सजिल्द 625.00
डॉ० रामचन्द्र तिवारी अजिल्द 440.00
हिन्दी उपन्यास सजिल्द 160.00
डॉ० रामचन्द्र तिवारी अजिल्द 100.00
हिन्दी निबंध और निबंधकार सजिल्द 250.00
डॉ० रामचन्द्र तिवारी अजिल्द 150.00
फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में सामाजिक यथार्थ *डॉ० सुधांशु शुक्ल* सजिल्द 80.00
हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास
डॉ० लालसाहब सिंह 50.00
निबन्धकार पं० विद्यानिवास मिश्र
डॉ० श्रुति मुखर्जी 50.00
हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई
डॉ० मदालसा व्यास 200.00
आधुनिकता और मोहन राकेश
डॉ० उर्मिला मिश्र 80.00
राहुल सांकृत्यायन के गद्य-साहित्य का शैलीगत अध्ययन
डॉ० गुप्तेश्वरनाथ उपाध्याय 60.00
प्रगतिशील आलोचना की परम्परा और डॉ० रामविलास शर्मा *डॉ० राजीव सिंह* 140.00
हिन्दी आलोचना और आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र *डॉ० रामबहादुर राय* 100.00
केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास
डॉ० एन०ई० विश्वनाथ अय्यर 250.00
साहित्य, सौन्दर्य और संस्कृति
सं० डॉ० रतनकुमार पाण्डेय 150.00
साहित्य और संस्कृति *डॉ० कन्हैया सिंह*
डॉ० राजेश सिंह 140.00
नवलेखन : समस्याएँ और सन्दर्भ
डॉ० श्यामसुन्दर घोष 60.00

काव्य साहित्य समीक्षा

मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन का सामाजिक विवेचन *डॉ० सुमन शर्मा* 60.00
हिन्दी कविता : इस्लामी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में *डॉ० जमीला आली जाफरी* 60.00
आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य का स्वरूप और विकास (1920-60)
डॉ० आशाकिशोर 80.00
प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन
डॉ० हरिनिवास पाण्डेय 150.00
आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष *डॉ० रतनकुमार पाण्डेय* 400.00
सौन्दर्यबोध और हिन्दी नवगीत
डॉ० माधवेन्द्रप्रसाद पाण्डेय 250.00
तुलसीकृत विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० रामअवतार पाण्डेय* 320.00
मिथकीय कल्पना और आधुनिक काव्य
डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव 120.00
नयी कविता में युगबोध सजिल्द 100.00
डॉ० प्रसिद्धनारायण चौबे
मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ सजिल्द 120.00
डॉ० रामकली सराफ अजिल्द 80.00
वल्लभ सम्प्रदाय और अष्टछाप *डॉ० युगेश्वर* 90.00
वाग्द्वार *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 250.00
समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ
डॉ० रामकली सराफ 200.00
क्रान्तिकारी कवि निराला सजिल्द 120.00
डॉ० बच्चन सिंह अजिल्द 80.00
गोरखनाथ : नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में
डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय 250.00
कबीर और भारतीय संत साहित्य सजिल्द 180.00
डॉ० रामचन्द्र तिवारी अजिल्द 100.00
हिन्दी संत काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन
प्रो० वासुदेव सिंह 380.00
रैदास परिचई *डॉ० शुकदेव सिंह* 25.00
कविवर बिहारी *जगन्नाथदास 'रत्नाकर'* 40.00
रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा *डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी* 80.00
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और उनका काव्य संसार *डॉ० मञ्जु त्रिपाठी* 100.00
मुक्तिबोध और उनकी कविता
डॉ० ब्रजबाला सिंह 180.00
भवानीप्रसाद मिश्र और उनका काव्य संसार *डॉ० अनुपम मिश्र* 160.00
नागार्जुन की काव्य-यात्रा
डॉ० रतनकुमार पाण्डेय 25.00

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य समीक्षा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 70.00
त्रिवेणी *सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 30.00
चिन्तामणि *सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40.00
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 50.00

प्रसाद-साहित्य

ध्रुवस्वामिनी (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 9.00
ध्रुवस्वामिनी (मूल नाटक तथा समीक्षा)
डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव 20.00
प्रसाद तथा 'आँसू' (मूल, टीका तथा समीक्षा) *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 40.00
कामायनी (काव्य) *जयशंकर प्रसाद* 20.00
लहर *जयशंकर प्रसाद* 15.00
चन्द्रगुप्त (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 25.00
स्कन्दगुप्त (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 20.00
अजातशत्रु (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 16.00

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'
सं० पुरुषोत्तमदास मोदी 150.00
प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ
डॉ० किशोरीलाल गुप्त 50.00
प्रसाद स्मृति वातायन *सं० विद्यानिवास मिश्र* 150.00
कामायनी विमर्श *भगीरथ दीक्षित* 100.00

प्रेमचंद-साहित्य

कर्मभूमि (उपन्यास) *प्रेमचंद* 40.00
निर्मला *प्रेमचंद* 25.00
संक्षिप्त गबन *प्रेमचंद* 30.00
गबन (सम्पूर्ण) सजि. 125.00 अजि. 45.00
गोदान सजि. 150.00 अजि. 60.00
मानसरोवर (भाग-1) 50.00

कबीर-साहित्य

कबीर-वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित) *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*
प्रथम खंड : रमैनी सजि. 80.00, अजि. 50.00
द्वितीय खंड : सबद सजि. 300.00, अजि. 200.00
तृतीय खंड : साखी सजि. 250.00, अजि. 140.00
कबीर वाणी पीयूष *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह* 50.00
कबीर-साखी-सुधा '' 10.00
भये कबीर कबीर (सब जग जलता देखिया) *डॉ० शुकदेव सिंह* 250.00
कबीर बीजक का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० शुकदेव सिंह 80.00

लोक-साहित्य

भोजपुरी लोक साहित्य सजिल्द 400.00
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय अजिल्द 250.00
गंगाघाटी के गीत *डॉ० हीरालाल तिवारी* 100.00
लोकगीतों के संदर्भ और आयाम
डॉ० शान्ति जैन 700.00
पुरइन-पात (पाठ्य ग्रन्थ)
सं० डॉ० अरुणेश 'नीरन'
डॉ० चितरंजन मिश्र 80.00
पुरइन-पात (भोजपुरी साहित्य संचयन)
सं० डॉ० अरुणेश 'नीरन'
डॉ० चितरंजन मिश्र 200.00
भोजपुरी हृदयेश सतसई *श्रीकृष्ण राय हृदयेश* 120.00
बदमाश दर्पण (तेग अली) *सं० श्रीनारायणदास* 60.00
चुनलगीत *सं० कृपाशंकर शुक्ल* 80.00

नाटक, एकांकी (मौलिक तथा सम्पादित)

भारत-दुर्दशा *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 12.00
श्रीचन्द्रावली नाटिका *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 16.00
अँधेर नगरी *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 12.00
गंगाद्वार *पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र* 40.00
भास्कर वर्मण (ऐतिहासिक नाटक)
डॉ० हीरालाल तिवारी 10.00
छोटे नाटक *सं० डॉ० शुकदेव सिंह* 22.00
शताब्दी पुरुष *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 40.00
देवयानी (पौराणिक नाटक)
डॉ० एम० चन्द्रशेखरन् नायर 20.00

GEOGRAPHY

राजनीतिक भूगोल एवं भू-राजनीति सजि. 200.00
डॉ० श्रीकान्त दक्षित अजिल्द 120.00
भौगोलिक चिन्तन : उद्भव एवं विकास
डॉ० श्रीकांत दीक्षित सजि. 200.00
अजिल्द 140.00

ZOOLOGY

Fishes of U.P. & Bihar
Dr. Gopalji Srivastava (H.B.) 200.00
(P.B.) 100.00

PHYSICS

Practical Physics
Dr. C.K. Bhattacharya (4 others) 60.00
Waves and Oscillations
Dongre & Bhattacharya 140.00

ENGLISH LITERATURE

The Mayor of Casterbridge *Thomas Hardy* 50.00
Shakespearian Comedy *H.B. Charlton* 120.00
Shakespere : A Critical Study of His Mind & Art *Edward Dowden* 150.00
Introduction to Movements, Ages and Literary Forms *Dr. R.N. Singh* 80.00
Twentieth Century Poetry *Shruti Srivastava* 30.00

काव्य-संकलन (सम्पादित)

समकालीन कवि और उनकी कविताएँ
डॉ० शम्भुनाथ त्रिपाठी 40.00
आधुनिक हिन्दी काव्य *डॉ० सत्यनारायण सिंह* 30.00
आधुनिक काव्य विविधा
डॉ० शम्भुनाथ त्रिपाठी 25.00
अज्ञेय और मुक्तिबोध की प्रतिनिधि कविताएँ *डॉ० शम्भुनाथ त्रिपाठी* 30.00
आधुनिक काव्यधारा *डॉ० विजयपाल सिंह* 30.00
छायावाद के प्रतिनिधि कवि
डॉ० विजयपाल सिंह 30.00
काव्य-सौरभ *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी* 25.00
दिशान्तर *डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव तथा डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी* 25.00
अस्मिता *डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव तथा डॉ० जितेन्द्रनाथ पाठक* 32.00
मध्यकालीन काव्य-संग्रह
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा 40.00
आधुनिक काव्य-संग्रह
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा 140.00
रीति-रस *डॉ० शुकदेव सिंह* 15.00
रीति काव्यधारा *डॉ० रामचन्द्र तिवारी तथा डॉ० रामफेर त्रिपाठी* 50.00
संक्षिप्त रामचन्द्रिका *सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 20.00
अयोध्याकाण्ड (रामचरितमानस)
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 40.00
सूर-सञ्चयन *उर्मिला मोदी* 30.00
कबीर वाणी पीयूष *डॉ० ठाकुर जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह* 50.00

काव्य-ग्रन्थ

धूमिल की कविताएँ *सं० डॉ० शुकदेव सिंह* 80.00
जौहर *श्यामनारायण पाण्डेय* 100.00
पद्मावत (स्तुति, सिंहलद्वीप वर्णन, मानसरोदक तथा नागमती सन्देश खण्ड)
डॉ० सच्चिदानन्द राय 36.00
मलिक मुहम्मद जायसी और पद्मावत (नखशिख एवं नागमती वियोग खण्ड)
डॉ० मोहनलाल तिवारी 40.00
परशुराम (खण्ड-काव्य) *श्यामनारायण पाण्डेय* 90.00
वेलि क्रिसन रुकमणी री
सं० डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित 80.00
संत रज्जब (रचना एवं समीक्षा)
डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय 150.00
कीर्तिलता और विद्यापति का युग
डॉ० अवधेश प्रधान 40.00
पद्मावती समय *डॉ० मोहनलाल तिवारी* 25.00

निबन्ध संग्रह

भोर का आवाहन *विद्यानिवास मिश्र* 20.00
निबंध संकलन *डॉ० रामकली सराफ* 40.00
आधुनिक निबन्ध *डॉ० सुरेन्द्रप्रताप* 40.00
निबन्ध और निबन्ध *उमाकान्त त्रिपाठी* 16.00
निबन्ध-सौरभ *डॉ० श्रीप्रसाद, डॉ० बिसम्भरनाथ* 16.00
संस्कृति-प्रवाह *प्रो० सोमेश्वर* 20.00
निबन्धायन *डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय* 15.00
निबंध निकष *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40.00
गद्य-सौरभ *सुमन मोदी* 16.00
संस्कृति संगम *डॉ० श्रीप्रसाद तथा डॉ० बिसम्भरनाथ* 16.00
ललित निबन्ध *केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा* 40.00
किरातनदी में चन्द्रमधु *कुबेरनाथ राय* 80.00

संस्मरण तथा रेखाचित्र

हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र
सं० डॉ० चौथीराम यादव 25.00
संस्मरण और रेखाचित्र *सं० उर्मिला मोदी* 30.00
रेखाएँ और रेखाएँ *सं० सुधाकर पाण्डेय तथा डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी* 40.00

कहानी-संग्रह

आधुनिक प्रतिनिधि कहानियाँ
डॉ० मुनीन्द्र तिवारी 45.00
प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियाँ
सं० डॉ० कुमार पंकज 80.00
कहानियाँ (कई कहानियाँ)
डॉ० शुकदेव सिंह 30.00
आधुनिक कहानियाँ *डॉ० सुरेन्द्रप्रताप* 30.00
प्रतिनिधि कहानियाँ *डॉ० बच्चन सिंह* 45.00
कृती कथाएँ *डॉ० शुकदेव सिंह तथा डॉ० विजयबहादुर सिंह* 30.00

सके। इसके अध्ययन-अध्यापन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। **—डॉ० सुधा गोपालकृष्णन**

निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

जुबानें नहीं मरतीं

इधर मैं उर्दू की बेहतरीन शायरी के तर्जुमे पर काम कर रहा हूँ। उर्दू के लिए कहा जाता है कि वह मरती हुई जुबान है। लेकिन मुझे महसूस हुआ कि जुबानें मरती नहीं। वे दूसरी जुबानों में घुल-मिल जाती हैं और उस जुबान को मजबूत करती हैं। दरअसल, इस्तेमाल न करने से जो चीज खत्म होती है, वह उसकी लिपि होती है। उर्दू का सफर यही साबित करता है।

हिन्दुस्तान में उर्दू नहीं मर रही है। अगर कुछ मर रहा है तो अरबी या नास्तालिक लिपि। लेकिन वह अब देवनागरी, पंजाबी और दूसरी जुबानों में नजर आने लगी है। हाल की हिन्दी और पंजाबी कविताओं में उर्दू के लफ्जों की भरमार होती है। वहाँ नज्म, और कसीदा वगैरह भी होते हैं। आप उसे अगर जोर से पढ़ें, तो कोई अंदाजा नहीं लगा सकता कि वह उर्दू नहीं कोई और जुबान है। हर जुबान दूसरे से कुछ ले कर अपने को बढ़ाती है। इसी वजह से अंग्रेजी यहाँ तक पहुँच गई है। फ्रेंच ने शुद्धता बनाए रखने की कोशिश की और वह अंग्रेजी से बुरी तरह पिछड़ गई। हमें उससे सीखना चाहिए। खासतौर पर हिन्दी वालों को। मैं खलिस हिन्दी की बात करनेवालों को दूरभाषी कहता हूँ। उनके लिए टेलीफोन दूरभाष है, जबकि अनपढ़ आदमी के लिए फून। ये दूरभाष तो जन्म लेते ही मर गया था। **—खुशवंत सिंह**

अब रक्षा मंत्रालय का काम हिन्दी में होगा

रक्षा मंत्रालय अंग्रेजी भाषा के बोझ से मुक्त होने की कवायद में जुट गया है। अब मंत्रालय में अधिक से अधिक काम राजभाषा हिन्दी में होगा। अभी मंत्रालय में 95 प्रतिशत कामकाज अंग्रेजी भाषा में होते हैं। रक्षा मंत्रालय के रक्षा उत्पादन विभाग की हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि रक्षा मंत्रालय बहुत बड़ा मंत्रालय है और चाहूँगा कि मंत्रालय का अधिक से अधिक काम राजभाषा हिन्दी में हो। मंत्रालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एक पुरस्कार योजना भी चलाइ जा रही है।

शुद्ध हिन्दी का प्रयोग

पूर्वोत्तर रेलवे वाराणसी मण्डल, राजभाषा विभाग की ओर से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। मण्डल के विभिन्न विभागों में कार्यरत 17 रेलकर्मियों ने दैनिक काम-काज के निष्पादन के दौरान लिखे जाने वाले हिन्दी-अंग्रेजी के पर्यायवाची शब्दों, टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन में शुद्ध हिन्दी के प्रयोग की जानकारी प्राप्त की। राजभाषा अधिकारी वी० डुंगडुंग ने रेल कार्यालयों से जारी होने वाले पत्रों के प्रारूप, टिप्पणियों के हिन्दी-अंग्रेजी पर्याय, टिप्पणी एवं पत्र-व्यवहार के वाक्यों के नमूने, अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय, हिन्दी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय, भाषा एवं वर्तनी की शुद्धता, शब्दों के चयन के साथ-साथ राजभाषा अधिनियम एवं नियम की जानकारी दी। मण्डल रेल प्रबन्धक शैलेन्द्र त्रिपाठी की अध्यक्षता में मण्डल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णयों के अन्तर्गत गत अप्रैल से प्रत्येक माह में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है।

महादेवी के गीतों पर 'आडियो'

महादेवी वर्मा साहित्य सहकार न्यास की ओर से महीयसी महादेवी वर्मा के गीतों को ऑडियो कैसेट में संजोने की योजना है। इसके अन्तर्गत न सिर्फ उनके चयनित गीतों को रिकार्ड किया जाएगा, गीतों के सन्दर्भ में न्यास के सांस्कृतिक सलाहकार गीतकार यश मालवीय की समीक्षा भी होगी।

प्रेमचंद के 'मैकू' ने वोट डाला

प्रेमचंद ने 1934 में कहानी लिखी 'मैकू'। 'मैकू' इस कहानी का मुख्य पात्र है, जिसने ठीके पर ताड़ी न पीने के लिए इसरार करते कांग्रेस के स्वयंसेवक को चाँटा मारा था जिसके गाल पर पाँचों उँगलियों के निशान उभर आये थे। चाँटा खाने के बाद भी स्वयंसेवक 'मैकू' से यही कहता—''आप ठीके के अन्दर मेरी छाती पर पाँव रखकर जा सकते हैं।''

मैकू ने कहा—''मैं अन्दर ताड़ी न पीऊँगा, एक दूसरा ही काम है।'' स्वयंसेवक ने हाथ जोड़कर कहा—''अपना वादा भूल न जाना''।

मैकू ठीके के भीतर जाता है, ठीकेदार स्वागत करता है। मैकू कहता है—''मैं तो आज न पीऊँगा''। ठीकेदार से डंडा माँगता है। मैकू ने डंडा पाते ही उछलकर ठीकेदार को ऐसा डंडा रसीद किया कि वहीं दोहरा होकर द्वार में गिर पड़ा। ताड़ीबाजों का नशा हिरन हुआ और घबड़ाकर भागने लगे। स्वयंसेवक श्रद्धा, प्रेम और गर्व की आँखों से मैकू को देख रहे थे।

वह मैकू आज भी जिन्दा है, उम्र 99 वर्ष। कुम्हार से जिल्दसाजी करके रोजी-रोटी चलाने वाला मैकू जो अब देख नहीं सकता, किन्तु अपने पोते की सहायता से मतदान स्थल पर पहुँच कर वोट डाला। इलाज न हो पाने के चलते अपनी दोनों आँख गँवा बैठा। उसे किसी राजनेता पर विश्वास नहीं परन्तु अपने लोकतांत्रिक अधिकार का प्रयोग वह अवश्य करेगा।

1934 में युवा मैकू ने मुंशी प्रेमचंद को लघुकथा 'मैकू' लिखने के लिए प्रेरित किया था।

मुंशीजी के सम्बन्ध इस मैकू कुम्हार के साथ सिर्फ लघुकथा लिखने तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि उनके वाराणसी स्थित सरस्वती प्रेस में अपनी सेवाएँ भी दी। मैकू ने कहा कि मुंशीजी ने हमेशा वास्तविक पात्रों की जिन्दगी के दर्द को रेखांकित किया चाहे वो मैकू हो या घीसू या फिर बूढ़ी काकी। न ही उन्होंने राजनीति से जुड़े लोगों पर विश्वास किया और न ही मुझे इन पर भरोसा है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं अपने मताधिकार का प्रयोग न करूँ।

ऋग्वेद यूनेस्को की धरोहर सूची में

यूनेस्को ने वैदिक ग्रन्थ 'ऋग्वेद' की 1800 से 1500 ईसा पूर्व की 30 पाण्डुलिपियों को सांस्कृतिक धरोहर सूची में शामिल किया है। इस सूची में 37 अन्य नाम भी शामिल किए गए हैं ताकि इन्हें आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जा सके। इस सूची में दुनिया की पहली फिल्म, स्वीडन के उद्योगपति एल्फ्रेड नोबेल के पारिवारिक अभिलेख और दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद विरोधी आन्दोलन के प्रतीक नेल्सन मंडेला के खिलाफ अदालती कार्यवाही के विवरण शामिल हैं।

काशीनाथ सिंह का 'रेहन पर रग्घू'

'काशी का अस्सी' के कथाकार काशीनाथ सिंह की इस कृति का दूसरा खण्ड फिलहाल नहीं लिखने जा रहे हैं। इसमें दर्ज जीवित पात्रों की सेहत पर तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला मगर अस्सी के वे अड़ीबाज जरूर मायूस हैं जिन्हें दूसरे खण्ड में अपने दाखिले की उम्मीदें रहीं। बहरहाल काशीनाथ सिंह के करीब सवा सौ पृष्ठों के नए उपन्यास का दिलचस्प नाम है—'रेहन पर रग्घू'। काशीनाथ सिंह के एक श्वेतकेशी शिष्य ने उपन्यास की कथावस्तु की बाबत उनसे पूछा कि कथा गाँव की है या शहरी तो उन्होंने कहा—दोनों। अस्सी स्थित पोई की अड़ी पर डॉ० गया सिंह की मेजबानी में दिल्ली से आए प्रख्यात चित्रकार भारतीय लेखक के सम्पादक हरिपाल त्यागी की खास मौजूदगी में यह साहित्य वार्ता सम्पन्न हुई।

त्रिवेणी प्रयाग के आगे भी जाती है

लोकसेवा आयोग के साक्षात्कार में प्रत्याशी से प्रश्न हुआ—छायावाद के कवि कौन-कौन हैं? प्रत्याशी ने उत्तर दिया—निराला, पंत, महादेवी। प्रश्नकर्ता ने कहा—त्रिवेणी प्रयाग के आगे काशी भी जाती है, क्या वहाँ कोई छायावादी नहीं है। प्रत्याशी—सिर खुजाने लगा। प्रश्नकर्ता ने कहा—क्या जयशंकर प्रसाद को भूल गये जो छायावाद के वास्तविक प्रवर्तक हैं?

संगोष्ठी/लोकार्पण

'रिश्तों के पार' का लोकार्पण

18 मई 2007 को सविता बडोनी की प्रथम काव्य कृति 'रिश्तों के पार' का लोकार्पण देहरादून में विधानसभा अध्यक्ष श्री हरबंस कपूर ने किया। जीवन मूल्य और संस्कृति की आभा को बिखेरती रचनाओं के लिए कवयित्री सविता बडोनी का साधुवाद किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ० गिरिजा शंकर त्रिवेदी ने कहा कि जन्मत: उदार हिमालय की गोद में पली सविता के मन में प्रकृति के प्रति बहुविध अनुराग व आराधना की झलक 'रिश्तों के पार' में है।

काव्य रचना को माँ सरस्वती की आराधना बताते हुए कवयित्री सविता बडोनी ने कहा कि मुझे पौड़ी गढ़वाल की नयनाभिराम जन्मस्थली और घर के संस्कारों ने कविता तथा कला के लिए उन्मुख किया।

'मीडिया विमर्श' के इंटरनेट संस्करण का लोकार्पण

जनसंचार के सरोकारों पर केन्द्रित त्रैमासिक पत्रिका 'मीडिया विमर्श' के इंटरनेट संस्करण का लोकार्पण करते हुए प्रख्यात कवि और ललित निबंधकार अष्टभुजा शुक्ल ने कहा—''आज का समय मीडिया की गिरफ्त में है। जिसमें कोई प्रतिरोध, अवरोह या टोकाटाकी की गुंजाइश नहीं। साहित्य हो या समाज दोनों अब सिर्फ मूक दर्शक की भूमिका में हैं। आलम यह है कि मीडिया का मायाजाल हमारे सोचने, समझने की शक्ति को भी कुंद कर रहा है।''

रायपुर के प्रेस क्लब में 'मीडिया विमर्श' द्वारा आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री शुक्ल ने कहा कि पत्रकारिता जगत में प्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डिया की पत्रिका 'विदुर' के बाद 'मीडिया विमर्श' पहली ऐसी पत्रिका है, जो इलेक्ट्रॉनिक और प्रिण्ट मीडिया पर दबंगता से अपनी बात कहने का मंच प्रदान करती है। इसके इंटरनेट पर आने से अब छत्तीसगढ़ से वैश्विक मीडिया विमर्श होगा। सही अर्थों में कहें तो मीडिया हमारे नस-नस में, दिल में उतर चुका है। जिन्दगी की सारी चीजों में मुँह के कौर तक में उसका हस्तक्षेप बढ़ गया है, खासतौर से दृश्य मीडिया का। वह घटनाओं को घटनाओं की तरह नहीं कांड की तरह प्रस्तुत करता है।

विशिष्ट अतिथि व प्रख्यात कथाकार जया जादवानी ने कहा कि किसी भी घटनाक्रम के बाद मीडिया यही प्रस्तुत करता है कि घटना कैसे हुई? जबकि साहित्य उसके भीतर पहुँचकर समाज पर पड़ने वाले उसके प्रभावों को भी रेखांकित करता है। मीडिया, समाज और साहित्य के बीच गहरे अंतर्संबंध हैं और वे ही उन्हें आपस में जोड़े रखते हैं। किसी भी समाज की कल्पना साहित्य और मीडिया के बिना नहीं हो सकती।

समारोह को वरिष्ठ पत्रकार तथा छत्तीसगढ़ हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के संचालक रमेश नैयर, कुशाभाऊ ठाकरे, पत्रकारिता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ० श्रीकांत सिंह, रायपुर प्रेस क्लब के अध्यक्ष अनिल पुसदकर ने भी सम्बोधित किया। इस पत्रिका को www.mediavimarsh.com पर देखा जा सकता है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

पत्रकारिता एवं जनसंचार, गुजरात विद्यापीठ में में यू०जी०सी० द्वारा आयोजित '21वीं सदी में मीडिया : बढ़ती चुनौतियाँ' विषयक द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई। उद्घाटन पत्रकार डॉ० रतन मार्शल ने किया। मुख्य अतिथि प्रो० ए०एस० बालासुब्रमण्य थे। मुख्य वक्ता प्रो० दिव्यभास्कर के चीफ एडीटर श्री अजय उमट थे। अध्यक्षता विद्यापीठ के कुलनायक डॉ० सुदर्शन आयंगरजी ने की और कृतज्ञता ज्ञापन कुलसचिव डॉ० राजेन्द्र खोमाणी ने किया।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय था 'वैश्वीकरण के युग में मीडिया का बदलता स्वरूप', 'जनसंचार और नयी सूचना प्रौद्योगिकी', 'संस्कृति, जनचेतना और मीडिया', 'पत्रकारिता का सामाजिक दायित्व और व्यावसायिकता'।

संगोष्ठी का समापन 'द हिन्दू' के पूर्व डिप्टी एडीटर श्री महेश बीजापुरकर ने किया।

साहित्य अकादमी में नरेन्द्र मोहन का काव्यपाठ

साहित्य अकादमी के तत्वावधान में हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार नरेन्द्र मोहन का काव्यपाठ आयोजित किया गया। नरेन्द्र मोहन ने उपस्थित कवियों तथा रचनकारों के सम्मुख लम्बे दौर में रची अपनी कविताओं की प्रस्तुति बड़े कलात्मक ढंग से की। विगत अर्द्धशताब्दी की राजनीतिक-सामाजिक चिन्ताएँ, कसमसाहट और छटपटाहट को काव्य सरोकार व काव्य विमर्श को, उपस्थित प्रबुद्ध कवियों और रचनाकारों ने कविताओं में गहराई से महसूस किया, नई तरह की वैचारिक ऊर्जा के साथ।

डॉ० महीप सिंह ने कहा कि नरेन्द्र मोहन की कविताएँ एक साथ सुनना एक अभूतपूर्व अनुभव है। इन कविताओं की संवाद और सम्बोधन की शैली आकर्षक है।

डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल ने कहा कि नरेन्द्र मोहन की कविताओं में इतिहास और स्मृति का संगम है। इन कविताओं में पूरा पंजाब दहकता-महकता उपस्थित है।

कवयित्री अनामिका ने कहा नरेन्द्र मोहन की कविता का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण निस्संगता है।

डॉ० के०जी० वर्मा ने कहा कि इनकी कविताओं की ताकत मानवीय सरोकारों से इनका गहरा जुड़ाव है।

भारतीय साहित्य में कृष्ण

साहित्यानुशीलन समिति, चेन्नई के तत्त्वावधान में समिति-अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने भारतीय जनमानस पर पड़े कृष्ण के पौराणिक और ऐतिहासिक रूपों के अमिट प्रभावों का उल्लेख करते हुए कहा कि समग्र भारतीय साहित्य में कृष्ण ही ऐसे नायक हैं जिनकी लीलाओं का रंग सहस्रों वर्षों से भारतीय मानस को रंजित एवं नंदित करता रहा है।

सुकविश्री संजय जोशी ने भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा। वरिष्ठ साहित्य-समीक्षक डॉ० एम० शेषन ने तमिल साहित्य की कृष्ण-काव्य परम्परा पर सविस्तार प्रकाश डाला।

डॉ० चिट्टी अन्नपूर्णा ने कहा तेलुगु कवि क्षेत्रय्या की तुलना विद्यापति से की जा सकती है।

विद्वान् श्री र० शौरिराजन ने श्रीमद्भगवदगीता के आधार पर श्रीकृष्ण के वर्चस्वी योगेश्वर रूप को उपस्थित किया।

मध्यकालीन कृष्णकाव्य में सौन्दर्य-चेतना पर संगोष्ठी

भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली में अखिल भारतीय परिषद्, दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में डॉ० रमानाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में दिल्ली विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के रीडर डॉ० पूरनचंद टण्डन के ग्रन्थ 'मध्यकालीन कृष्णकाव्य में सौन्दर्यचेतना' परिचर्चा-संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

विषय-प्रवर्तन करते हुए डॉ० रामशरण गौड़ ने कहा इस कृति में मध्यकालीन कृष्णकाव्य (भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन) के माध्यम से सौन्दर्य का सांगोपांग गम्भीर शास्त्रीय विवेचन किया है। वस्तुत: यह कृति सौन्दर्यशास्त्र के उपादानों का एक उत्कृष्ट कोश है। डॉ० रामस्वरूप शर्मा, प्रो० चमनलाल सप्रू, प्रो० धर्मपाल मैनी, डॉ० सूर्यकांत बाली ने भी पुस्तक की विशेषताओं पर प्रकाश डाला।

दक्षिण में हिन्दी का आगमन अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 1296 के आक्रमण के बाद शुरू हुआ।

ठलुआ बीरबल स्व० मुरारीलाल केडिया के चुटकुले

1. ठलुआ क्लब के मुण्डन समारोह में बाबा विश्वनाथ के महन्त आदरणीय रमाशंकरजी त्रिपाठी उन्हें भेंट करने के लिए शिवलिंग लाए थे। उन्होंने कहा कि आज मैं बहुत परेशान हुआ। जहाँ भी जाता था 'अचल' ही मिलता था। बड़ी कठिनाइयों से एक 'सचल' मिला जो आपको भेंट दे रहा हूँ। शिवलिंग भेंट देकर वे मुड़कर पीछे जाने लगे। तभी केडियाजी ने आवाज दी कि कहाँ जा रहे हैं? मेरी बात भी सुनकर जाइये। आज का दिन आपके लिए बड़ा शुभ रहा। आपके साथ 'चल' लगा। आपके हाथ 'अचल' लगा। 'चंचल' चाहिए तो इधर है। चल-अचल-चंचल के अलंकारिक प्रयोग का कितना सुन्दर दृष्टान्त है।

2. एक साहित्यिक मित्र ने केडियाजी के घर खाने की प्रशंसा करते हुए कहा कि जितनी बार खाने आता हूँ, कुछ न कुछ नया व्यंजन अवश्य मिलता है। केडियाजी ने तुरन्त कहा कि मैं कोई साहित्यकार तो हूँ नहीं कि एक ही पुस्तक का बार-बार संस्करण निकालूँ।

3. केडियाजी नागरी प्रचारिणी सभा के अर्थमंत्री थे और डॉ० राजबली पाण्डेय प्रधानमंत्री। एक उपसमिति की बैठक डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी के घर पर थी। उसमें ये ही तीन सदस्य थे। राजबलीजी को आने में विलम्ब हो गया तो केडियाजी ने द्विवेदीजी से कहा कि कोरम पूरा है, बैठक चालू करें। 5-10 मिनट में बैठक समाप्त हो गई। केडियाजी जैसे ही बाहर निकले, राजबलीजी पहुँच गए। केडियाजी ने कहा कि पाण्डेयजी आप विलम्ब से आए। बैठक तो समाप्त हो गई। राजबलीजी ने विनोद से कहा कि मंत्री दो तरह के होते हैं। एक अर्थमंत्री और एक अनर्थ मंत्री। केडियाजी ने तुरन्त नहले पर दहला जड़ा और बोले संयोग से इस समय यहाँ दोनों उपस्थित हैं।

4. एक बार स्व० रायकृष्णदासजी के यहाँ कविवर दिनकरजी ठहरे थे, विश्वविद्यालय स्थित सीता-निवास में। भोजन के बाद बच्चों ने कुछ सुनाने का आग्रह किया। पहले तो उन्होंने नखरा किया। उन दिनों वे केन्द्र सरकार में हिन्दी सलाहकार थे और उनका सचिव साथ रहता था। सामने आलमारी में पुस्तकें रखी थीं। उसमें उनकी कीट्स की कविताओं के अनुवाद वाली पुस्तक रखी थी। अपने सचिव को बोले कि वह किताब निकाल कर दो और फिर उसमें से छाँट-छाँटकर कविताएँ सुनायी जो आरम्भ की तो सुनाते ही चले गए। जाड़े का मौसम था। ठंडी हवा को झेलते हुए केडियाजी को रिक्शे से चौक जाना था। उन्होंने दिनकरजी को टोक कर कहा, महाराज एक बात मेरी भी सुन लीजिए। एक बार मैं राजा शिवप्रसाद गुप्त के यहाँ मिलने गया। वे एक कटोरी में किशमिश रखकर, उसमें से छाँट-छाँट कर खा रहे थे। पर आखिर में एक भी नहीं बची। दिनकरजी ने ठहाका लगाया और तुरन्त पुस्तक बन्द कर दी।

—गगनेन्द्रकुमार केडिया

हिन्दी प्रेम

विख्यात साहित्यकार श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' कांचीपुरम में कामाक्षी देवी के दर्शन के लिए पहुँचे।

एक ब्राह्मण युवक गाइड के नाते कांची मठ के शंकराचार्य तथा कामाक्षी देवी के विषय में अंग्रेजी भाषा में उन्हें जानकारी देने लगा। अज्ञेयजी ने विनम्रता से पूछा, तुम शंकराचार्य मठ के छात्र रहे होगे? संस्कृत तथा हिन्दी अवश्य पढ़ी होगी? उसने उत्तर दिया संस्कृत-निष्ठ हिन्दी खूब जानता हूँ।

फिर तुम हमें अंग्रेजी में जानकारी क्यों दे रहे हो? हिन्दी में समझाओ। युवक ने संस्कृत गर्भित हिन्दी में कामाक्षी का महत्त्व समझाना शुरू किया, तो अज्ञेयजी उसके हिन्दी ज्ञान को देखकर भावविभोर हो उठे और बोले कि अंग्रेजी भाषा में देवी की उत्पत्ति, दिव्य स्वरूप तथा शंकराचार्यजी आदि के उपदेशों का रहस्य कदापि नहीं समझाया जा सकता। हिन्दी ही इसके लिए सक्षम है।

उन्होंने प्रसन्न होकर ब्राह्मण युवक को 25 रुपये के बजाय 50 रुपये इनाम में दिए तथा कहा, भविष्य में हिन्दी में ही दर्शनार्थियों का मार्गदर्शन करना। **—नरेन्द्र गोयल**

अध्ययन से आनन्द मिलता है, अभिव्यक्ति में सौन्दर्य आता है तथा योग्यता बढ़ती है। **—सर फ्रान्सिस बेकन**

पुस्तकें चाहे कितनी ही अच्छी हों, हमें सदा प्रसन्न नहीं करतीं, हमारे मन उनके विषय को ग्रहण करने के लिए सदा उत्सुक नहीं होते। **—जार्ज केबल**

होली पर राजेन्द्र अवस्थी को महामूर्ख की उपाधि

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक एवं 'कादम्बिनी' के पूर्व सम्पादक **राजेन्द्र अवस्थी** को इस वर्ष होली के मौके पर राजधानी दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महामूर्ख महासम्मेलन में महामूर्ख की उपाधि प्रदान की गयी। महासम्मेलन में श्री अवस्थी को गधे पर बैठा कर इस उपाधि से विभूषित किया गया। श्री अवस्थी की गदर्भराज पर आधारित आरती भी उतारी गयी। सम्मेलन में भाग लेने वाले लोगों ने देश में सभी क्षेत्रों में मौर्खत्व को बढ़ाने का संकल्प भी व्यक्त किया। श्री अवस्थी ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा कि महामूर्ख की उपाधि मिलना उनके जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सम्मान है।

विद्या स्फीयते ज्ञानम्

ज्ञान पुस्तकों से मिलता है। लोग अपने जीवन के अनुभवों का वर्णन पुस्तकों में करते हैं, जब हम इन्हें पढ़ते हैं तो कुछ सीखते ही हैं। कुछ ऐसे अनुभव प्राप्त करते हैं, जिन्हें प्राप्त करने में पूरा जीवन ही बीत जाता है। जीवन भी एक बड़ी पुस्तक ही तो है, इसके प्रत्येक दिन एक-एक पृष्ठ की तरह है और पृष्ठ की प्रत्येक लाइन से जीवन के रहस्य उजागर होते हैं। गीता, वेद, पुराण, बाइबल, गुरुग्रन्थ साहिब, रामायण, महाभारत आदि हजारों साल पुराने ग्रन्थ, पुस्तकें हैं, पर आज भी हम उनसे कुछ सीखते ही हैं, दु:ख आने पर आज भी गीता के श्लोक हमें ढाँढ़स बँधाते हैं। सुख के समय भी उनका ही साथ होता है। हर जाति समुदाय के लिए पुराने ग्रन्थ ही उन्हें राह दिखाते हैं, दु:ख सुख में साथ होते हैं। पुस्तकें ज्ञान का भण्डार हैं, वह निस्पन्द हैं, फिर भी जीवन निहित है उनमें। जीवन की कठिनाइयों से उबरने की राह दिखाती हैं ये पुस्तकें। तुलसीदास, सूरदास, कबीर, रहीम, वेदव्यास, वाल्मीकि, कृष्ण, ईशा, मीराबाई, गाँधीजी आदि सभी लोग भले ही शरीर से इस दुनिया में नहीं हैं, पर पुस्तकों में सभी आज भी जिन्दा हैं। हम उनके जीवन से प्रेरणा लेते हैं, आज भी उनके बताये रास्ते पर चलते हैं। जो ज्ञान लोग पचास साल का जीवन जी कर भी नहीं प्राप्त कर पाते, अच्छी पुस्तकों से वही ज्ञान हम जीवन के शुरुआती दिनों में ही पा सकते हैं। इनमें जीवन का गूढ़तम रहस्य भरा है, जो हमारे लिए संचित है। जिस घर में पुस्तकों का संचय है, वहाँ तमाम समझदार विचारों का वास है। किसी विचारक ने कहा भी है, कुएँ को जितना खोदा जाए, उससे उतना अधिक पानी मिलता है। इसी तरह जितना स्वाध्याय किया जाए, पठन-पाठन किया जाए, मनुष्य उतना ही ज्ञानवान बनता है। जीवन क्या है? जीवन के बाद क्या है? आत्मा-परमात्मा क्या है? जीवन की सफलता, जीवन की कठिनाइयों का हल सब ग्रन्थों से जाना जा सकता है। पढ़ने के लिए, ज्ञान प्राप्ति के लिए, आयु कभी बाधक नहीं होती। ज्ञान तो कभी न चुकने वाला खजाना है। सगे, सम्बन्धी, मित्र आपका साथ छोड़ सकते हैं, पर अर्जित किया ज्ञान, सदा आपके साथ ही रहता है।

विद्या स्फीयते ज्ञानम्।

अर्थात् विद्या से ज्ञान बरसता है। व्यर्थ ही समय न गँवाएँ, अध्ययन करें, स्वाध्याय स्वस्थ एवं गुणकारी है। इससे विचारों को नई दिशा मिलती है। **—कीर्ति अवस्थी**

परिचर्चा

लोकजीवन और वेद

वार्ताकार :

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी, पं० प्रभुदयाल मिश्र और डॉ० भास्कराचार्य त्रिपाठी

प्रभुदयाल मिश्र : वेद हमारे सर्वस्व हैं। हमारी संस्कृति और हमारे समाज का आज जो आकार है, वह वेद विनिर्मित है।

यह बहुत बड़ी प्रसन्नता की बात है कि हमारे बीच में डॉ० राधावल्लभजी त्रिपाठी जो डॉ० हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में संस्कृत विभागाध्यक्ष हैं, उपस्थित हैं और श्री भास्कराचार्य जी त्रिपाठी, जो मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी के पूर्व सचिव हैं, विद्यमान हैं। लोक जीवन से जुड़े हुए डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठीजी की हाल ही में एक पुस्तक आई है 'अथर्ववेद का काव्य'। संयोग से अथर्ववेद चौथा, ऐसा वेद है जो तत्कालीन भारतीय समाज का प्रतिनिधित्व करता है। तत्समय हमारा लोक जीवन कैसा रहा होगा? और उसकी वह शाश्वत अंतर्धारा जो आज हमारे बीच मौजूद है, क्या है, विचार योग्य है। अथर्ववेद के पहले ऋग्वेद की पहली कविता है। ऋग्वेद का ऋषि प्रार्थना के स्तर पर काम करता है। वह देवता और प्रकृति को निकट से देखता है। उसके अपने कष्ट हैं, अपनी चिन्ताएँ हैं, अपनी परेशानियाँ हैं। उन सबको वह कविता के माध्यम से व्यक्त करना चाहता है। इस तरह उसका काव्य तत्त्व शायद अधिक प्रगाढ़ है। राधावल्लभजी ने 'अथर्ववेद का काव्य' लिखा है।

अथर्ववेद के काव्य में क्या वह कविता के तत्त्वों को उतनी ही प्रामाणिकता से प्राप्त करते हैं? यदि वेदों के काव्य पक्ष को हम समग्रता से देखना चाहें तो अथर्ववेद की कविता का स्थान क्या है?

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी : मिश्रजी जो चार वेद संहितायें हैं उनमें कौन प्राचीन है, कौन अर्वाचीन है, यह एक जटिल प्रश्न है। इसकी बहुत प्रासंगिकता हमारे लिये नहीं है। यह तो एक ऐसी शाश्वत ज्ञान-धारा है जो जनजीवन से उद्‌भूत हुई और जनजीवन में प्रतिबिम्बित हुई। आधुनिक विद्वान कहते हैं कि अथर्ववेद में ऐसे बहुत सारे सूक्त हो सकते हैं जो प्राचीनतम होंगे। तो सम्पूर्ण वेद ज्ञान की एक ऐसी दिव्य अलौकिक राशि है जो भारत की अमूल्य धरोहर और विश्व संस्कृति को भारत की अनमोल देन है। हर सहस्राब्दी में कहीं न कहीं से कोई आवाज आई है कि वेद की तरफ देखो। ईसा की एक सहस्राब्दी पूर्व से साहित्यिक प्रमाण मिलता है कि यास्क निरुक्त लिख रहे हैं क्योंकि वेद के काव्यों का अर्थ लोग भूल रहे हैं। वेदों के मंत्रों के कई स्तरों पर अर्थ हुआ करते हैं। इनका एक ऐतिहासिक अर्थ है, इनका एक देवता पक्ष में अर्थ है तथा इनका एक आख्यान पक्ष में अर्थ है। वस्तुत: वेद में अनंत व्याख्यायों की सम्भावनायें छिपी हुई हैं।

महाकवि कालिदास अपने प्रसिद्ध नाटक 'विक्रमोर्वशीयम्' में जो लिख रहे हैं वह पूरा का पूरा ऋग्वेद का उर्वशी पुरूरवा सूक्त है। यह जो 2000 साल की नाटक की अत्यन्त तटस्थ संस्कृत साहित्य-परम्परा है उसमें कहीं न कहीं वेद की अन्तर्धारा है। उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी में ऋषि दयानंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महर्षि अरविंद, सातवलेकर आदि सभी वेद से अनुप्राणित हैं। लोकामान्य तिलक ने तो एक ऐसा अद्‌भुत अनुसंधान कार्य किया है जिसकी हम किसी से तुलना नहीं कर सकते। वेद तो धरती के इतिहास की सबसे प्राचीन पुस्तक है।

प्रभुदयाल मिश्र : अब मूल प्रश्न वही है कि आज हमारे जीवन के वे कौन से पक्ष हैं, चाहे वे सामाजिक जीवन के हों, पारिवारिक जीवन के हों, राजनीतिक जीवन के हों, या चाहे भारतीय मनीषा के हों, जिन्होंने वेदों को आत्मसात किया है। हमारा सौभाग्य है कि श्री भास्कराचार्यजी त्रिपाठी हमारे बीच में मौजूद हैं। इस विषय पर आपका परिमार्जन हो।

भास्कराचार्य त्रिपाठी : अपने यहाँ आस्तिक उसी को कहते हैं जो कि वेद की मान्यता करता है और जो उन्हें नहीं मानता है, वह नास्तिक है। प्रकृति और लोक के दृश्य में तदाकार वेद का ऋषि कहता है ''मंडूक और नजदीक आकर बोलो। वर्षा को बुला लो और बीच जल राशि में तैरो। कैसे तैरो? चारों पाँव ढीले कर दो और तैरो''। यह अप्रतिम लोक चित्र है। मैं समझता हूँ कि आज हम 21वीं शताब्दी के उन्मीलन में यदि 'अथर्ववेद का काव्य' और 'वेद की कविता' जैसी महत्त्वपूर्ण कृतियों पर विचार कर रहे हैं तो भारतवर्ष के आँगन में बैठकर ऋषियों का ऋण उतारने में ही लगे हैं।

प्रभुदयाल मिश्र : एक सूक्त बहुत प्रासंगिक है, वह 'सूर्या विवाह' का है। सूर्या विवाह ऋग्वेद और अथर्ववेद दोनों में है। सूर्य की पुत्री है सूर्या और सूर्य ने उसके लिए स्वयंवर रचा। तो स्वयंवर में सब देवता आते हैं लेकिन सूर्या वरण करती है अश्विनी कुमारों का।

पारिवारिक सौमनस्य के लिये ससुराल वालों का बहू को इससे बड़ा आशीर्वाद नहीं हो सकता—''श्वसुर, सासू की बनो तुम स्वामिनी/ ननद, देवर सभी हों/तुम्हारे अनुगत''।

भास्कराचार्य : मिश्रजी, मैं तो इन सूक्तों के प्रतीकात्मक अर्थ करता हूँ। सूर्य ऊर्जा है, ऊष्मा है। उसकी पुत्री सूर्या यौवन की देहली पर सवितु, गायत्री-सम्पन्न हुई है। उसका लोक-सौन्दर्य समाज में संप्रतिष्ठित हो रहा है।

मैं यह मानता हूँ कि सूर्या विवाह हमारी विवाह की सबसे प्रौढ़ पद्धति का रेखांकन है। जिन आदि मंत्रों से राम और कृष्ण का विवाह सम्पन्न कराया गया होगा वे आज भी इस तरह अक्षुण्ण हैं। श्री राधावल्लभजी इस सम्बन्ध में आधिकारिक टिप्पणियों की अपेक्षा है।

राधावल्लभ त्रिपाठी : वास्तव में सृष्टि के सभी पक्ष वेद में समाहित हैं। सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के भी तीन पक्ष हैं—आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक। सूर्या विवाह को भी इन तीनों स्तरों पर जाकर हमें समझना होगा। सूर्या का विवाह अग्नि, गंधर्व और अश्विनीकुमारों से होने का यही रहस्य है। ये चेतना के त्रिविध स्तर हैं। इसमें दाम्पत्य जीवन की सफलता का सूत्र है। इसमें पति-पत्नी के हाथ को अपने हाथ में लेकर कहता है कि ''तुझे देवताओं ने मुझे सौंपा है। तू सारा जीवन मेरे साथ व्यतीत कर।''

इस सूक्त में भौतिक जीवन का सत्य भरा हुआ है। अथर्ववेद में आधुनिक समाज के आचार और विचारों का उन्मीलन है। वास्तव में समाज के सर्वांगीण होलिस्टिक समाहार का उदाहरण अथर्ववेद के अन्यत्र खोजा जाना कठिन है।

प्रभुदयाल मिश्र : अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त है। साहित्य, समाज, राष्ट्र तथा मानवता आदि कोई भी पक्ष इससे अछूता नहीं है। मुझे पृथ्वी सूक्त के अपने काव्यानुवाद में से निम्न पंक्तियाँ इस अवसर पर बरबस याद आती हैं—

गंध जो पृथिवी तुम्हारी
पुरुष में है / और नारी में
परस्पर कान्ति, शोभा
अश्व, मृग, हाथी
सुकन्या आदि का वर्चस्
वह करे सुरभित हमें भी
द्वेष हमसे न करे कोई कहीं।

विश्व मानवता और विश्व बन्धुत्व का अद्‌भुत संदेश देता हुअए यह पैंतालीसवाँ सूक्त भी उद्धृत करना चाहता हूँ—

विविध धर्मी/विविध भाषा/विविध भूतल—मानवों का/एक तुम ही घर अटल/हो गाय कपिला/सरल सीधी/हमारे हित/सहस-धारा/दुग्ध-धन की/बनो पृथिवी।

मैं चाहता हूँ कि इस सूक्त और इस वैदिक सन्देश में आपकी टिप्पणियाँ भी प्राप्त हों।

भास्कराचार्य त्रिपाठी : वैदिक ऋषि की घोषणा है—

माता भूमि पुत्रोऽहम प्रथिव्य:

विश्व मानवता का यह एक सिद्ध मंत्र है। आज के युग का क्षेत्रीयतावाद और वर्ग संघर्ष इस दिव्य सन्देश में कोई स्थान नहीं रखता। पृथ्वी सूक्त का फलक इतना व्यापक है कि इसमें धरती आकाश ही नहीं मानवीय जीवन के सभी आध्यात्मिक, भौतिक और आधिदैविक पक्ष

समाविष्ट हो गये हैं। निश्चित ही अथर्ववेद की रत्नगर्भा पृथ्वी लोक जीवन को समृद्ध करती है।

राधावल्लभ त्रिपाठी : विश्व साहित्य में पृथ्वी सूक्त से बड़ी कोई कविता खोज पाना दुर्लभ है। अभी जिस विश्व मानवतावाद के सन्देश का उदाहरण दिया गया, पैंतालीसवाँ मंत्र है।

जन विभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।

इस सूक्त में वसुन्धरा का दिव्य और तरल रूप दिखाई पड़ता है। यह जीवन की समग्र मार्मिकता और सम्पूर्ण कविता का परिचय देती है। वैदिक ऋषि कामना करता है कि वह पृथ्वी में जो बीज बोये वे जल्दी उग आयें किन्तु बीज बोने के लिये पृथ्वी को खोदते हुए वह उसके मर्म स्थल पर कोई आघात न पहुँचाये। इस तरह इसमें सृष्टि की सारी चेतना पिरोई गई है। वस्तुत: यइ एक विश्व बोध है। यदि हम आज अपने देश के भू-भाग को भारत माता कहते हैं तो यह परम्परा पृथ्वी सूक्त से ही आई है। मैं थाईलैण्ड में रहा हूँ। मैंने वहाँ धरती की प्रतिमाएँ देखी हैं। मैं मानता हूँ कि यह परम्परा भारतीयों ने ही वहाँ पहुँचाई है।

प्रभुदयाल मिश्र : 'लोक जीवन और वेद' इस विषय पर आज की इस ऐतिहासिक संगोष्ठी के लिये आप दोनों मनीषियों का बहुत आभार मानता हूँ।

पुस्तक जीवनदान देती है, कैसे

कहानी सम्राट मुंशी प्रेमचंद अपने कमरे में बैठे लिखने में व्यस्त थे। अचानक एक व्यक्ति उनके कमरे में पहुँचा और उनके पैरों में गिरकर रोने लगा। मुंशीजी ने उसे उठाया और आत्मीय भाव से पास में बैठाया। उन्होंने पूछा—''पैरों में गिरकर क्यों रो रहे हो? मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ।''

वह बोला ''मैं व्यापारी हूँ। व्यापार में लगातार घाटा आते रहने से कर्जदार हो गया था। रोटी के लाले पड़ गये। जीवन से इतना निराश हुआ कि आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया। अचानक, एक दिन पत्रिका में आपकी लिखी कहानी 'प्रेरणा' पढ़ी। उस कहानी ने मुझमें आत्मविश्वास जगा दिया। आत्महत्या का विचार त्याग दिया। पुन: विवेक के साथ उत्साह से व्यापार में जुट गया। कुछ ही दिनों में व्यापार चल निकला और मैं फिर से लखपति बन गया।'' व्यापारी कुछ क्षण रुककर बोला ''मैं आज आपकी कहानी की प्रेरणा के कारण ही यहाँ जीवित दिख रहा हूँ।'' मुंशी प्रेमचंद सहजता से मुसकुराए और बोले आज मेरे लेखन मुझे सार्थकता का बोध हुआ।

भूलीं नहीं जो यादें

भारत में पेपरबैक पुस्तक-क्रान्ति के प्रणेता
दीनानाथ मल्होत्रा के रोचक एवं प्रेरक संस्मरण

प्रकाशक : **सरस्वती विहार**
जे-40, जोरबाग़ लेन, नई दिल्ली-110003

मूल्य : 195.00

6 अप्रैल 1929, डीएवी स्कूल, लाहौर, कक्षा-2, 6 वर्ष का बालक, दो लम्बे कद्दावर सिपाही, अध्यापक से कानाफूसी, अध्यापक बालक से कहता है—जाओ तुम्हारी माताजी ने बुलाया है। अनारकली में बालक के पिता की पुस्तकों की दूकान। चारों ओर भीड़ ही भीड़। दूकान पहुँचने पर देखा—मृत पिता का शव माता की गोद में। पास ही खून से सना लम्बा छुरा जिससे पिता की हत्या की गई थी। बालक दीनानाथ स्तब्ध।

वहाँ उपस्थित थे दीनानाथ का डेढ़ वर्ष का भाई सुरेन्द्र, साढ़े-आठ वर्ष के विश्वनाथ, ग्यारह वर्ष के प्राणनाथ, बड़ी बहन सुमित्रा। माता सरस्वती देवी ज्ञान की गंगा में नहाती हुई दुर्गा।

राजपालजी ने आर्यसमाजी विद्वान् पं० चमूपति की पुस्तक 'रंगीला रसूल' प्रकाशित की थी, मुकदमा चला। हाईकोर्ट से बरी हुए किन्तु इलमदीन ने बरी नहीं किया, हत्या कर दी। महाशय राजपालजी की आयु मात्र 44 वर्ष थी। पन्द्रह वर्षों के प्रकाशकीय जीवन में उन्होंने न केवल हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन में नए कीर्तिमान स्थापित किए, अपितु सुदूर देशों—मारीशस, फिजी, पूर्वी अफ्रीका, ब्रिटिश तथा डच गायना आदि स्थानों पर बड़ी संख्या में जाते थे।

ऐसे बलिदानी परिवार और परिवेश में पले बढ़े श्री दीनानाथ के कर्म जीवन की गाथा है—**भूली नहीं जो यादें**। ऐसी यादें क्या भुलाई जा सकती हैं जिसने 6 वर्ष की अवस्था में ऐसा दृश्य देखा।

दीनानाथजी ने पंजाब विश्वविद्यालय से संबद्ध डी०ए०वी० कॉलेज से राजनीतिशास्त्र में एम०ए० किया। प्रथम श्रेणी में एम०ए० करने के बाद राजनीतिशास्त्र के अध्यक्ष जी०डी० सोंधी से लेक्चरर बनाने के लिए अनुरोध करने गये। प्रो० सोंधी ने कहा—तुम्हारे परिवार का पुस्तक-प्रकाशन का काम है। जाओ और उसे शुरू से सीखो। आलमारियों में पड़ी एक-एक पुस्तक को देखो और साफ़ करो। इसी में तुम्हारा श्रेय है।

इसी समय डी०ए०वी० कॉलेज श्रीनगर (कश्मीर) में नवस्थापित कॉलेज के प्रिंसिपल इतिहासज्ञ प्रो० श्रीराम शर्मा मिल गये। उन्होंने नवस्थापित कॉलेज में नियुक्ति कर दी। उस समय 135 रुपये मासिक वेतन बहुत बड़ी राशि मानी जाती थी, आज की 30 हजार भी उसके आगे नगण्य है।

बड़े भाई विश्वनाथजी ने लाहौर लौट कर पुस्तक-प्रकाशन के काम में जुटने का अनुरोध किया। एक वर्ष से भी कम समय का अध्यापकीय जीवन समाप्त कर लाहौर लौट आये।

दीनानाथजी का प्रकाशकीय जीवन पूर्ण रूप से शुरू हो गया। धीरे-धीरे पुस्तक-प्रकाशन, प्रचार, विक्रय आदि के अनेक देशी-विदेशी अनुभव प्राप्त किये। अमेरिका, यूरोप और जापान के सभी देशों की यात्रा की। उनकी यह पुस्तक **भूलीं नहीं जो यादें** प्रकाशकों की गीता है। एक अनुभवी प्रकाशक के संस्मरणों से भरपूर है। जिसने भारत में पेपरबैक प्रकाशन की क्रान्ति का सूत्रपात किया। यह भारतीय पुस्तक-प्रकाशन की गाथा है। इसमें बीसवीं सदी की सामाजिक एवं राजनैतिक क्रान्तियों के रोचक एवं प्रेरक संस्मरण हैं। पुस्तक व्यवसाय में लगे हुए प्रत्येक व्यक्ति और संघर्षशील युवक को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए।

बड़े भाई विश्वनाथजी ने अमर शहीद पिता के नाम पर राजपाल एण्ड संज़ की स्थापना की और दीनानाथजी ने ज्ञान की गंगा में नहाती दुर्गा माता सरस्वती के नाम पर सरस्वती विहार की स्थापना कर हिन्द पॉकेट बुक्स का प्रकाशन किया। आज 84 वर्ष की अवस्था में पठन-लेखन में संलग्न हैं। उनके चिरंजीव श्री शेखर मलहोत्रा सरस्वती विहार तथा हिन्द पाकेट बुक्स को आगे बढ़ा रहे हैं।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

पढ़ते रहो बढ़ते रहो

खोलती हैं ज्ञान का हर द्वार पुस्तकें
देती हमें ताकत यहाँ हर बार पुस्तकें
जब भी अकेले हम रहें तो साथ निभाएँ
करती हैं आदमी को सदा प्यार पुस्तकें
जो दृश्य आज है यहाँ वो कल न रहेगा
करती रहेंगी दृश्य को साकार पुस्तकें
दुनिया की सैर कर लो आसान बहुत है
घर बैठ दिखा देती हैं संसार पुस्तकें
पढ़ते रहो, बढ़ते रहो है जीत तुम्हारी
हर जंग के लिए करें तैयार पुस्तकें...।
आज की कल की, एक-एक पल की
खुशियों की गमों की
फूलों की बमों की
जीत की हार की, प्यार के मार की
क्या तुम सुनोगे इन किताबों की बातें
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे साथ रहना चाहती हैं...।

—गिरीश पंकज

पुस्तक समीक्षा

मुगलकालीन सरकार तथा प्रशासनिक व्यवस्था

डॉ० ऊषारानी बंसल

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-535-8

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 100.00

डॉ० ऊषारानी बंसल द्वारा रचित पाठ्य पुस्तक वस्तुत: एक सराहनीय प्रयास है। जिसके अध्ययन से हिन्दीभाषी छात्र निश्चय ही लाभान्वित होंगे।

उक्त पाठ्य-पुस्तक में विषय की समीक्षात्मक विवेचना की गई है तथा इसके पीछे स्रोतों के अध्ययन का ठोस आधार है। लेखिका ने अंग्रेजी भाषा के प्रामाणिक ग्रन्थों के गहन अध्ययन करके अपनी सोच बनाई है एवं विषय की अभिव्यक्ति सरल व प्रभावमयी भाषा में की है ताकि विद्यार्थी इस गम्भीर विषय को भली-भाँति समझ सकें।

प्रस्तुत पुस्तक को विदुषी लेखिका ने दस अध्यायों में बाँटा है। प्रथम दो अध्यायों में मुगल राज्य एवं शासन व्यवस्था के स्वरूप की विवेचना की गई है। मुगल शासकों द्वारा अपनाये गये राजनीतिक आदर्श एवं परम्परा से फारसी, मध्य-एशियन व विशेषत: तैमूरी आदर्शों एवं भारतीय परम्पराओं का सुखद समावेश प्रस्तुत करते हैं। सल्तनत काल से ही राजत्त्व एवं प्रशासनिक व्यवस्था के विकास की जो प्रक्रिया विकसित हो रही थी, मुगलकाल में उनमें व्यवधान नहीं हुआ बल्कि उनको और भी पखारा-सँवारा गया। यह कार्य मुगल सम्राट अकबर ने किया। परवर्ती शासकों ने भी उनमें यथासम्भव योगदान दिया।

अकबर ने विभिन्न स्तरों पर समन्वय के महत्त्व को समझा तथा तैमूरी, फारसी एवं भारतीय राज्यादर्शों को समन्वित कर उसे एक व्यापक आधार दिया। प्रशासनिक व्यवस्था को स्थायित्व देने की पहल भी अकबर के काल में हुई।

तृतीय तथा चतुर्थ अध्यायों में मुगलों के राजत्त्व सिद्धान्त की पृष्ठभूमि की समीक्षा की गई है। मुगल दैवी सिद्धान्त के प्रतिपादक थे। तत्कालीन ऐतिहासिक ग्रन्थों में इन आदर्शों की अभिव्यक्ति हुई है। इसके लिये बहुत से प्रतीक भी अपनाये गये ताकि मुगल बादशाह की गरिमा भली-भाँति स्थापित हो सके। उनकी सरकार केन्द्रीयकृत थी जिसकी धुरी वयं बादशाह था। साम्राज्य के अन्तरिम भागों में अपनी पहुँच बनाने के लिये मुगल शासक मृगया का सहारा लेते थे। झरोखा दर्शन भी जनमानस से सम्पर्क का एक प्रयास था।

अगले पाँच अध्यायों में प्रशासनिक व्यवस्था का विवरण विस्तार से और विभिन्न आयामों में किया गया है। मनसब व्यवस्था के प्रवर्तन द्वारा शाही सिविल सेवा को व्यवस्थित किया गया जिसके कारण कार्य-कुशलता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। पदों के लिये कार्यकुशलता व योग्यता ही प्रमुख आधार थी। प्रशासनिक गतिविधियों का विधिवत रिकार्ड रखा जाता था। स्थानीय प्रशासन की इकाईयों की गतिविधियाँ भी सरकार के मद्देनज़र रहती थीं। परगना मुगल स्थानीय प्रशासन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपसंभाग था। इस प्रकार मुगलों ने प्रशासन की कुशल प्रणाली विकसित की जिसके कारण प्रशासन व्यवस्थित हुआ और उसे स्थायित्व मिला।

लेखिका ने ग्रन्थ के अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची के अतिरिक्त पारिभाषिक शब्दों की सूची भी संलग्न की है। पारिभाषिक शब्दावली के कारण विद्यार्थियों को विशेष रूप से लाभ होगा।

—डॉ० त्रिवेदी, न्यू देहली-75

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी

संस्करण : 2007

ISBN : 978-81-7124-563-5

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 250.00

राधावल्लभ त्रिपाठी का संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास सचमुच में एक अभिनव इतिहास है। यह संस्कृत साहित्य की पाँच सहस्र से अधिक वर्षों की परम्परा का विशद परिचय तो देता ही है, इस साहित्य की सुदीर्घ विकास यात्रा का उद्भव काल, स्थापना काल, समृद्धिकाल तथा विस्तार काल इन चार कालों के क्रमिक सोपानों में विभाजन के द्वारा विद्वान् लेखक ने हमारी साहित्यिक धरोहर का पुनर्व्यवस्थापन और पुनर्मूल्यांकन भी नये आलोक में यहाँ किया है। संस्कृत के अनेक अज्ञात किन्तु महत्त्वपूर्ण रचनाकारों का परिचय पहली बार इस कृति में समाविष्ट हुआ है, तथा प्रसिद्ध महाकवियों की जो समीक्षा की गई है, वह छात्रों तथा साहित्य के जिज्ञासु पाठकों के लिये तो उपादेय है ही, विद्वज्जनों के लिये भी ग्राह्य है।

पुस्तक के द्वितीय संस्करण में संस्कृत साहित्य से सम्बन्धित अनेक नवीन प्रकरण जोड़े गये हैं, जिससे यह और भी संग्रहणीय बन गई है।

भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य-परम्परा

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी

संस्करण : 2007

ISBN : 978-81-7124-568-0

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 180.00

प्रस्तुत पुस्तक भारतीय काव्यशास्त्र के प्रस्थानप्रवर्तक आचार्यों पर केन्द्रित है। इसमें ऐतरेय महीदास से लेकर पण्डितराज जगन्नाथ तक ग्यारह आचार्यों के काव्य और कला से सम्बन्धित विचारों का गहरा विमर्श प्रस्तुत करते हुए इनके बीच पारस्परिक अन्त:संवाद, आदान-प्रदान तथा इनके माध्यम से हमारे कलाचिन्तन में उठने वाले शास्त्रार्थ या बहस के अनेक बिन्दुओं पर विद्वान् लेखक ने विचार किया है। श्री त्रिपाठी ने यहाँ भारतीय काव्यचिन्तन की तीन हजार वर्षों की सम्पन्न परम्परा को विशद रूप में उजागर किया है। प्रत्येक आचार्य की सांस्कृतिक व दार्शनिक पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए उन्होंने उसके समकालीन या पूर्ववर्ती आचार्यों के मन्तव्यों को भी तुलनात्मक आलोक में प्रस्तुत किया है। ये ग्यारह आचार्य परम्परा को उसकी समग्रता में समझने के लिये आधार भी बनाते हैं। स्वभावत: इनकी सांस्कृतिक व दार्शनिक पृष्ठभूमि पर भी यहाँ विचार किया गया है, और इनके समकालीन या पूर्ववर्ती आचार्यों का भी यथाप्रसंग निरूपण किया गया है।

काव्यशास्त्र में रुचि रखने वाले सुधी पाठकों के लिये यह ग्रन्थ अत्यन्त उपादेय है।

हिन्दी निबंध और निबंधकार

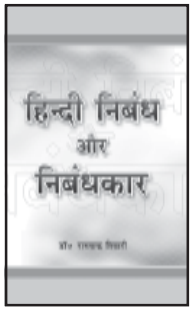

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

संस्करण : 2007

ISBN : 978-81-7124-565-9

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 250.00

हिन्दी-निबंध-लेखन का प्रारम्भ भारतेन्दु-युग (1887-1900 ई०) से स्वीकार किया जाता है। इस युग को हिन्दी-नवजागरण का द्वितीय चरण कहा गया है। सन् 1857 का स्वतन्त्रता-संग्राम हिन्दी-नवजागरण का प्रथम चरण है। हिन्दी-नवजागरण की प्रमुख विशेषता हिन्दी-प्रदेश की जनता में स्वातन्त्र्य-चेतना जाग्रत होना है।

आज हिन्दी-निबंध साहित्य के पिछले सवा-

सौ वर्षों के लम्बे इतिहास को देखते हुए जब हम उसकी उपलब्धियों का आकलन करते हैं तो चकित रह जाना पड़ता है। नवजागरण के आलोक में अपनी भाषा को अपनी जातीय अस्मिता के अभिलक्षण-रूप में सामने रखकर हमने अपनी यात्रा आरम्भ की थी। क्रमशः अपनी भाषा, अपने देश और लोक-हित की भावनाओं को लक्ष्य बनाकर हम आगे बढ़े। इस क्रम में हमने अपनी सामाजिक जड़ता को तोड़ा और स्वाधीन चेतना को रचना के केन्द्र में रखकर औपनिवेशिक चिन्तन के धुँधलके को साफ करते हुए अपनी संस्कृति और साहित्य के उज्ज्वल पक्ष को सामने रखा। हमारा निबंध-साहित्य हमारी इस सम्पूर्ण रचना-यात्रा का साक्षी है। भाषा, शैली, वाक्य-संरचना, उक्ति-भंगिमा, संवेदना-संस्पर्श, व्यक्तित्व-व्यंजना के वैविध्य एवं विस्तार तथा लालित्य-विधान की दृष्टि से भी हिन्दी-निबंध की समृद्धि आश्वस्ति प्रदान करनेवाली है। हमें अपनी इस उपलब्धि पर सन्तोष और गर्व है। हम अपने भविष्य के प्रति पूर्ण आश्वस्त हैं। जब तक रचना का सम्बन्ध स्वाधीन चेतना से बना रहेगा, हिन्दी-निबंध अपने उत्कर्ष, विस्तार और वैविध्य को सुरक्षित रखते हुए विकसित और समृद्ध होता रहेगा।

विवेकी राय और उनका सृजन-संसार

डॉ० मान्धाता राय

संस्करण : 2007

ISBN :
978-81-7124-559-8

विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी

मूल्य : 150.00

'साहित्य अपने समय का सच्चा इतिहास होता है'—प्रेमचंद के कथा गँवई सच का डॉ० विवेकी राय के साहित्य में पूरी तरह साक्षात किया जा सकता है, जहाँ स्वातंत्र्योत्तर भारतीय गाँवों का सच चित्रित तो है ही, साथ-साथ नवसृजनवादी सोच को पर्याप्त प्रोत्साहन तथा प्रगतिशील सामाजिक ढाँचे को मजबूत करने का प्रयास भी मुखर है। **—डॉ० नामवर सिंह**

अपने अंचल के बीच लगातार जीते चलने के कारण वहाँ के पात्रों, उनके सम्बन्धों, समस्याओं, मूल्य-संक्रमण, लोकगीतों व लोक-व्यापारों आदि की प्रामाणिक छवि उनके साहित्य में उभरती रही है, उभरती जा रही है। लगता है उनके अनुभवों में लगातार बदलता हुआ अंचल अपने बहुआयामी यथार्थ के साथ खलबला रहा है और उनके उपन्यासों, निबन्ध और कहानियों के माध्यम से फूट पड़ने को आकुल-व्याकुल है।

—डॉ० रामदरश मिश्र

कथाकार, उपन्यासकार, ललित निबंधकार, समीक्षक, संस्मरणकार-कितनी ही विधाओं में उनकी कलम चलती रही है। वे खड़ी बोली के अलावा भोजपुरी में भी बहुत कुछ लिख चुके हैं। सोनामाटी, लोकऋण, नमामि-ग्रामम जैसे उपन्यास ग्राम केन्द्रित महाकाव्य जैसे हैं। आंचलिक लेखन की सबसे बड़ी विभूति के रूप में फणीश्वरनाथ रेणु प्रतिष्ठित हैं। विवेकी राय उसके बाद सबसे बड़े ग्राम लेखक हैं।

—डॉ० एन०ई० विश्वनाथ अय्यर

विवेकी राय ने हिन्दी को जितने नये शब्द दिये हैं, प्रेमचंद के बाद शायद ही कोई दूसरा उपन्यासकार दे सका है। **—डॉ० गोपाल राय**

महाराष्ट्र के कर्मयोगी

ना०वि० सप्रे

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN :
978-81-89498-18-4

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 80.00

1. महात्मा फुले, 2. गोपाल गणेश आगरकर, 3. महर्षि कर्वे, 4. महर्षि विट्ठल रामजी शिंदे, 5. संत गाडगेबाबा, 6. डॉ० भीमराव आंबेडकर, 7. संत तनपुरे महाराज, 8. कर्मवीर भाऊराव पाटील, 9. श्री रघुनाथ धोंडो कर्वे।

पुरुष-पुराण

विवेकी राय

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN :
978-81-89498-02-3

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 90.00

'पुरुष-पुराण' अर्थात् गाथा एक सूखी चमड़ी की झोरी में भरे मैले कंकाल की, साँस-साँस से 'राम हो!' पुकारते एक शुद्ध सांस्कृतिक पुरुष की, जो बीती सदी में एक दूर देहात में जनमा और वहीं की मिट्टी से चिपका, सन-सफेद बाल, अपने द्विधाहीन भोले विश्वासों की चट्टान पर अडिग खड़ा है।

बहुत सीमित है उसका जीवन-बोध और ज्ञान-अनुभव। पर मूल्य और महत्त्व उतना इसका नहीं कि उसका बताया इतिहास-भूगोल और धर्म कितना सच्चा या यथार्थ है, जितना अपनी जानकारी के सन्दर्भ में उसकी दृढ़ता का है। अवश्य लगता है कि वह जैसे अतीत में कहीं ठहरा हुआ एक प्राणी है; और आधुनिक बोध का अतिरेक उदग्र होकर उसके सारे धराकाश को नरा अन्ध विश्वास पुकार उठना चाहता है। पर भीतर से इसे भी चेतना के स्तर पर पूरा समर्थन इसके लिए मिल पाता है क्या?

वास्तव में 'पुरुष-पुराण' एक करुण गाथा है पुरानी और नयी पीढ़ियों के विभेद-संघर्ष की जो एक सहज सत्य बना प्रत्येक वर्ग और समाज, महल और झोपड़ी को परिव्याप्त किये हुए है, और जिसमें जीवन का सारा अँधेरा ही नहीं, उजाला भी समाया हुआ है। 'पुरुष-पुराण' एक सीधी-सरल-रोचक रचना, किन्तु अर्थवान् और महत्त्वपूर्ण; पीढ़ियों के संघर्ष में उब-डुब करते मानस के लिए तो अनिवार्य।

आधुनिक भारत के युग प्रवर्तक संत

लक्ष्मी सक्सेना

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN :
978-81-87760-12-2

प्रकाशक : लोकायत प्रकाशन
एच 2/3, नरिया,
बी०एच०यू०, वाराणसी-05
वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : सजिल्द 250.00 अजिल्द : 150.00

रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, महर्षि रमण, श्री अरविन्द, स्वामी रामानन्द बीसवीं शताब्दी के युग-प्रवर्तक संत थे। इन संतों के जीवन और विचारों के माध्यम से हम उच्च आयामों से सम्बद्ध अन्तर्दृष्टि विकसित करें। इस पुस्तक का यही उद्देश्य है।

सूचना का अधिकार और महिला सशक्तीकरण

छवि श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 978-81-904747-0-2

प्रकाशक :
सोसाइटी फॉर मीडिया ऐण्ड सोशल डेवलपमेण्ट
के० 67/81 ए-1, ईश्वरगंगी, भरतमिलाप कालोनी
वाराणसी-221001
वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 120.00

आदिकाल से ही महिलाएँ परिवार तथा समाज के केन्द्र में रही हैं। सभ्यता, संस्कृति तथा संस्कार के प्रसार में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। विश्व की लगभग आधी आबादी होने के बावजूद भी यह शोषण, अन्याय, हिंसा और पिछड़ेपन से ग्रसित हैं। समाज में पूजनीय होने के बाद भी इनकी स्थिति दोयम दर्जे की है।

महिला सशक्तीकरण के उद्देश्य की पूर्ति में सूचना का अधिकार महत्त्वपूर्ण माध्यम है। शोषण

और अन्याय के विरुद्ध लड़ाई का मजबूत हथियार है।

सूचना का अधिकार और महिला सशक्तीकरण यद्यपि अलग-अलग विषय हैं तथापि दोनों में एक अप्रत्यक्ष रिश्ता है। प्रस्तुत पुस्तक में सूचना का अधिकार कानून महिलाओं की समस्याओं तथा सशक्तीकरण में कहाँ तक सहायक हो सकता है और कैसे ? इस पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

राहे-हक़

(गज़ल संग्रह)

मुनीर बख़्श 'आलम'

प्रकाशक

गीता जयंती समारोह समिति

रेलवे स्टेशन रोड, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र

मूल्य : 150.00

'राहे हक़' एक नेक इंसान की चीख है जो सन्नाटे से टकराने के बाद प्रार्थना बनकर लौटती है।

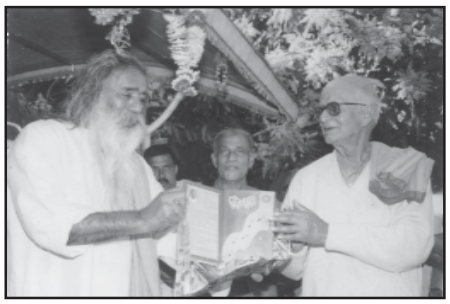

'राहे-हक़' के विमोचन के अवसर पर
बायें से : स्वामी अड़गड़ानंदजी महाराज, मुनीर बख़्श 'आलम', डॉ० विवेकी राय।

आम आदमी की पीड़ा, सम-सामयिक विरोधाभाषी दौर, पीड़ा का बहुआयामी प्रसार, ऊब-उदासी, अजनबीपन, अन्तरमुखता, अशान्ति और फिर शान्ति की खोज से लेकर, प्रार्थना, अध्यात्म, नैतिकता तथा जीवन के विविध आयाम, विविध यथार्थ रूप ग़ज़लों में मर्मस्पर्शी स्पर्श पाते हैं। **—डॉ० विवेकी राय**

नेत्र भंग

(खण्ड काव्य)

लेखक : **रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरोध'**

प्रकाशक : निर्मल प्रकाशन

221 रवीन्द्र सरणी, कोलकाता-7,

पृष्ठ : 96 मूल्य : 125.00

गोस्वामी तुलसीदास ने 'अरण्यकाण्ड' के आरम्भ में इन्द्र-पुत्र जयन्त का नामोल्लेख करते हुए कहा है कि 'वायस पालिए अति अनुरागा। होहि निरामिष कबहूं कि काका।' उसी काक-प्रकरण का विषय-प्रतिपादन इस खण्ड काव्य में किया गया है। वेद, उपनिषद, पुराणादि ग्रन्थों में विभिन्न रूपों में जयन्त की चर्चा हुई है। श्री राम के चित्रकूट निवास-काल में मांसभक्षी जयन्त ने कौए का वेष धारण कर माता सीताजी पर बार-बार चंचु-प्रहार किया। सीताजी पर लगे घाव को देखकर मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम ने एक कुश (तृण) को ब्रह्मास्त्र के मंत्र से अभिमंत्रित कर कौए के पीछे छोड़ दिया। तीनों लोकों में वह भागता फिरा किन्तु कहीं उसको शरण नहीं मिली। आखिर वह श्री राम की शरण में आया और श्री राम ने दण्डस्वरूप उसकी दायीं आँख फोड़ दी। यही प्रकरण इस काव्य का प्रतिपाद्य विषय है।

लेखक ने काक-प्रकरण का अति विस्तार से आमुख में उल्लेख किया है, जो उनकी अध्ययनशीलता का परिचायक है। उन्होंने अतीत को वर्तमान से जोड़ते हुए आज की स्थिति पर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है। छह सर्गों के खण्ड काव्य में व्यापक भावनात्मक मूल्य है। भिन्न-भिन्न छन्दों के प्रयोग से इसकी सरसता हृदयस्पर्शी है। इससे संवेदना प्रस्फुटित हुई है। पुस्तक पठनीय और संग्रहणीय है। **—पानासि**

छायावाद की मैदानी और पहाड़ी शैलियाँ

लेखक : **डॉ० कान्तिकुमार जैन**

प्रकाशक : सरोज प्रकाशन

ई.एल.सी. हॉस्टल, विश्वविद्यालय रोड, सागर (म०प्र०)

पृष्ठ : 199 मूल्य : 200.00

डॉ० कान्तिकुमार जैन की समीक्षा-शैली अपनी पहचान में अकेली है। विषय की तह में पहुँचकर गुण-दोष को परखने की इनकी अपनी विशिष्ट दृष्टि है। जो कहना होता है, वह कह कर रहते हैं। छत्तीसगढ़ के नये-पुराने प्राय: सभी रचनाकारों को इन्होंने आदरपूर्वक ऊपर उठाया है। इनका मानना है कि इन्होंने निबन्ध तभी लिखे हैं जब इन्हें विषय से सम्बद्ध कोई नई बात सूझी है। प्रस्तुत पुस्तक के शीर्षक से विषय की गम्भीरता स्पष्ट होती है। छायावाद पर इनके विचार कई निबन्धों में पढ़ा है। कविता हो या कहानी इनकी पकड़ अपने अन्दाज से सहज और अभिव्यक्तिपूर्ण होती है। इनकी भाषा सपाट दौड़ती है और विचार का धरातल सुदृढ़ होता है। पुस्तक-समीक्षा ही नहीं, संस्मरण लिखने में बेजोड़ हैं। इनको जो कहना होता है सत्य से हटकर नहीं कहते। प्रस्तुत पुस्तक में छत्तीसगढ़ तथा उसके बाहर के रचनाकारों को उनकी शैलीगत विशेषताओं, कथ्य के परिवेश और उनके अन्तरमन को टटोला है। साहित्यप्रेमियों के लिए पुस्तक न केवल पठनीय है, संग्रहणीय भी है। **—पानासि**

ब्रिटिश, भारत में 1803 में पहला परिपत्र जारी किया गया ताकि सभी नियमों, विनियमों का हिन्दी अनुवाद किया जाए।

राष्ट्रभाषा का सम्मान

प्रसिद्ध गाँधीवादी नेता और कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर पट्टाभि सीतारमैया अपने सभी पत्रों पर हिन्दी में ही पता लिखते थे। इस कारण दक्षिण भारत के डाकखानेवालों को बड़ी असुविधा होती थी। एक बार उन सब ने उन्हें कहला भेजा, ''आप अंग्रेजी में पते लिखा करें, ताकि बाँटने में आसानी हो।''

पट्टाभि सीतारमैया ने जवाब दिया, ''भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है, अत: मैं अपने पत्र-व्यवहार में उसी का प्रयोग करूँगा।''

डाकघरवालों ने कहा, ''देखिए, अगर आप ने अंग्रेजी में पते लिखने शुरू न किए तो हम आप के ऐसे सारे पत्र डेड लेटर ऑफिस में भिजवा देंगे।''

पट्टाभि सीतारमैया पर इस धमकी का कोई असर नहीं हुआ। दोनों पक्षों के बीच एक अरसे तक शीतयुद्ध-सा जारी रहा। आखिर, डाकखानेवालों को ही झुकना पड़ा, मजबूरन उहें मछलीपट्टनम के डाकघर में एक हिन्दी जाननेवाले आदमी को रखना ही पड़ा।

गजल

(बनारसी बोली)

नाऊ जेकर बहुत जपीला हम
ऊ त गुमनाम हौ सुनीला हम
सिव क दुर्गा क पाठ का हौ
नां ऊ मंत्री के अब रटीस हम
जब से देखली है रंग हम ओनकर
मन ओही रंग में रंगीला हम
साठ रुपया किलो मलाई हौ
नाम खाली रटल करीला हम
चिवक नाही मिलत जलेबा हो
चाह आने के बदे धरीला हम
चांद आडबला जब छरे हमरे
चाँदनी में हँसल करीला हम
तू त भइलऽ सिमेंट क बोरिया
इन्तिजारी में नित मरीला हम
अस फँस उसनकि का कहीं भयवा
ऊ चरावलऽ और चरीला हम
तू लड़ाई से पार का पइबा
राजनीतिक समर लड़ीला हम
लोग हम्मे कहलऽ 'बेढब' हौ
बात ढब क मगर कहीला हम।

झुमि झुमि बेनिया डोलावेला पवनवाँ
बगिया के अंगना हँसेला खरिहनवाँ
गइया के गोबरा से लिपल रे भुइयां
चिकन चाकन लागे इहवाँ के ठइयाँ
खतेवा के तपली के झुलसल मनवाँ
तपवा के फल आजु दिहले गुसइयाँ

—बेढ़ब बनारसी

गीता और कुरआन : अनुवादक : आर०पी० मित्तल, यूनिटी पब्लिशर, 1570-बी, दरियाबाद, इलाहाबाद, मूल्य : 100.00

यह पुस्तक स्वर्गीय श्री सुन्दरलाल द्वारा 1926 ई० में मूल रूप से उर्दू में लिखी गई थी।

आज साम्प्रदायिकता के दूषित वातावरण में यह पुस्तक आपसी सौहार्द्र तथा भाई-चारे को जोड़ने तथा दो धर्मों के बीच व्याप्त भ्रमों को तोड़ने का कार्य करेगी।

लोक वातायन : कैलाश त्रिपाठी, अनुसंधान, 712-ए, न्यू मॉडल कालोनी, बरेली-243122, मूल्य 200.00

हमारा जीवन बहुपक्षीय होने के कारण हमारा चिन्तन भी बहुपक्षीय होता है। लोक वातायन में जीवन तथा समाज के विभिन्न पक्षों पर चिंतनपरक लेख संकलित हैं जो इसकी विशेषता है।

महाभारत के पात्र, 'धृतराष्ट्र' अन्धे नहीं थे तथा (अन्य शास्त्रयोचित तथ्य) : आर०पी० मित्तल, यूनिटी पब्लिशर, 1570-बी, दरियाबाद, इलाहाबाद, मूल्य : 50.00

प्रस्तुत पुस्तक शास्त्रयोचित ढंग से पूर्व में स्थापित अनेक तथ्यों की संशयता को समाप्त करने तथा नई वास्तविकता की खोज का आग्रह है।

गुल्लक : सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत, राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्य प्रदेश, भोपाल द्वारा प्रकाशित, सम्पादक : गुरुबचन सिंह

किसी अन्य प्रदेश द्वारा बच्चों के लिए प्रकाशित ऐसी सुन्दर बाल पत्रिका देखने में नहीं आई। डिमाई चार आकार की 54 पृष्ठों की पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ सन्दर्भित विषयों के रंगीन चित्रों से सज्जित। बुलबुल, कोयल, चिड़ियों के तरह-तरह के पैर, चतुर चित्रकार, बर्षा पढ़ने आई शाला, आई धूप, रोटी (डॉ० श्रीप्रसाद), रस की गुल्लक (मधुमक्खियाँ), तितलियों के पंख, राष्ट्रीय बरगद, बच्चों द्वारा रेखांकित रंगीन चित्र, कहानियाँ, अकल बड़ी या भैंस, मेरी बगिया आदि शीर्षकों पर ज्ञानवर्धक रोचक तथा पर्यावरण के प्रति जागरूक करती रचनाएँ। सही मायने में यह बच्चों की साहित्यिक गुल्लक है।

जिस बच्चे के हाथ में पत्रिका पड़ेगी वह उसे पढ़े बिना नहीं रहेगा। सर्वशिक्षा अभियान की दिशा में यह सार्थक प्रयास है।

ईश्वर का मानस बोध : बिहारी बापू, गीता प्रकाशन, काली सिन्ध (भवन), मूल्य : 325

प्रत्येक मानव स्वरूप जीवात्मा के मानस में जो शाश्वत है। वही ईश्वर का मानस स्वरूप है। ईश्वर के मानस स्वरूप, अस्तित्व, ब्रह्माण्ड तथा जड़-चेतन के सम्बन्धों पर सूक्ष्म दृष्टि से वैज्ञानिक विवेचन और चिंतन ही प्रस्तुत पुस्तक सार तथा आकर्षण है।

वह रहस्यमय सन्यासी : अरुण कुमार शर्मा, आगम-निगम संस्थान, बी. 5/23, अवधगर्वी, हरिश्चन्द्र रोड वाराणसी, मूल्य : 250.00

मेरा जीवन मेरा संघर्ष : राजेन्द्रमोहन भटनागर, प्रकाशक : पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा०लि०, नई दिल्ली-110005, मूल्य : 40.00।

इस पुस्तक में सोनिया गांधी का संक्षिप्त चरित्र का विवरण प्रस्तुत है। बचपन, युवावस्था और शिक्षा, राजीव से मुलाकात, सात फेरे, इन्दिराजी के साथ, संकट में परिवार, नवीन चुनौतियों का सामना।

संघर्षशील महिला की रोचक कहानी। अनेक चित्रों से सज्जित। बच्चों के लिए विशेष रूप से पठनीय।

पुस्तकें मानवता को दिया गया प्रतिभाशाली महापुरुषों का वह दाय (विरासत) है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमें मिलता रहा है। यह उस भावी सन्तान के लिए भी है जो अभी जन्मी नहीं है।

—जोसेफ एडिसन

शब्दमयी रचना के द्वारा मन में उत्तेजना आती है और हमारी आत्मा पुलकित होती है।

—एरिस्टोफेनीज (यूनानी लेखक)

क्या पुस्तकों का कोई विकल्प है?

कम्प्यूटर-इंटरनेट-वेबसाइट को पुस्तकों का विकल्प माना जा रहा है। यह बात कुछ हद तक सही हो सकती है लेकिन पुस्तकों के साथ जो सुविधाएँ हैं, वह इंटरनेट के साथ नहीं। पुस्तकों के साथ हम कहीं भी घूम-फिर सकते हैं। कुछ पढ़ते हुए कोई पत्ता, कोई फूल, कोई मोरपंख, कोई बुक मार्क दबाकर पुस्तक बन्द कर देना और फिर उस पढ़े हुए को सोचते रहना, पढ़े हुए का तारतम्य जहाँ कहीं, हमारे या पाठक के जीवन से जुड़ता है क्योंकि पुस्तक में पाठक जैसे अपने ही दुःख-तकलीफों, सुख और सपनों की खोज में भटकता रहता है। कोई मार्ग तलाशता हुआ। विजय कुमार ने एक बार 'पढ़ने की क्रिया' की चर्चा करते हुए उस परिस्थिति विशेष की महत्ता को उजागर किया जिसमें हम किसी कृति को पढ़ते हैं—वह ऋतु धूप-छाँव, सुनसान, पत्ते, फूल, किसी पक्षी की आवाज और जीवन के वे दिन पुस्तक पढ़ने की स्मृति से जुड़कर अमर हो जाते हैं। दुबारा उस पुस्तक की याद या उसे पलटना उन बीते दिनों या जीवन की पुनर्खोज की तरह होता है।

—वागर्थ से

वृंदावनलाल वर्मा और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

—महाश्वेता देवी

वृंदावनलाल वर्मा का गाँव बुन्देलखण्ड में था। झाँसी तब स्वाधीन मराठा राज्य था। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने 1857 में जब अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया, तब वृंदावनलाल वर्मा के प्रपितामह आनंद राव झाँसी राज्य की मौरानी पर तहसील के दीवान थे। झाँसी की रानी जब कालपी चली गईं और वहाँ से ग्वालियर गईं, उस समय अंग्रेज झाँसी पर जबरन कब्जा करने के लिए आगे बढ़ने लगे, तो आनंद राव ने कहा कि वे जीते जी अंग्रेजों को झाँसी में प्रवेश नहीं करने देंगे। झाँसी की रानी के मरने के बाद भी आनंद राव अपने निश्चय पर दृढ़ रहे। अंग्रेजों के सेनापति ने उनसे पूछा कि रानी मर चुकी हैं, अब वे क्यों संग्राम कर रहे हैं? इस पर आनंद राव का जवाब था, ''रानी मर गई होंगी, आनंद राव तो जिन्दा है।'' प्रपितामह की इस वीरगाथा से वृंदावनलाल वर्मा को हमेशा प्रेरणा मिली। वर्माजी ने मुझसे कहा था, ''प्रपितामह के प्रति मेरी श्रद्धा माँ से भी ज्यादा थी। देश माँ से बड़ा होता है। प्रपितामह ने देश के लिए अपनी कुर्बानी दी थी।''

वर्माजी ने बताया था, ''मेरी परदादी मुझे बहुत प्यार करती थीं और रोज ही मुझे भारतीय वीरों की कहानियाँ सुनाया करती थीं। इस तरह बचपन से ही मैं वीरता का उपासक बन गया। मेरी प्रारम्भिक शिक्षा ललितपुर में हुई। उसके बाद पढ़ने के लिए झाँसी चला आया। मैट्रिक पास करने के बाद मुहर्रिर बन गया, फिर जंगल विभाग में काम करने लगा, लेकिन आगे अध्ययन में मेरी रुचि बनी रही। 1913 में वकालत की पढ़ाई करने के लिए मैंने आगरा कॉलेज में दाखिला लिया। वहीं से एलएलबी की डिग्री हासिल की। झाँसी में वकालत करने लगा। वकालत चल निकली, लेकिन उस दौरान भी निरन्तर लिखता रहा। बाद में अपनी स्वयं की प्रकाशन संस्था 'मयूर प्रकाशन' शुरू की। वहीं से मेरा समूचा साहित्य प्रकाशित होता रहा।''

वर्माजी एक ऐसे सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिनमें समाज के लिए सीधे-सीधे कुछ करने का एक जज़्बा था। वर्माजी ने 1952 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा की तरफ से मिली पुरस्कार राशि असम के बाढ़ पीड़ितों को दान कर दी थी।

14वीं सदी में अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, बीदर, आदिलशाही, कुतुबशाही, बरीदशाही आदि राज्यों ने हिन्दी को अपनी राजभाषा बनाया था।

पुस्तकें प्राप्त

प्रतिध्वनि, 31 सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट, कोलकाता-7 से प्राप्त पुस्तकें—

धूप में नहाई देह गन्ध : डॉ० इन्दु जोशी, मूल्य 100.00

प्रेम और करुणा से परिपूर्ण नारी जीवन की संघर्ष-गाथा मार्मिक बिम्बों में अभिव्यक्त। पिता खण्ड के अन्तर्गत घर-परिवार का आत्मचिन्तन।

श्रुति सुगन्ध : छविनाथ मिश्र, वैदिक ऋचाओं का गीतान्तरण

हे पृथिवी/मधुक्षरा कामधेनु/जो जहाँ जन्मे है/उनको हम सबके लिए/सोम्य आनन्द का स्रोत करो/हम सबके भीतर/निहित करो वाणी की मधुरता/जो सबके प्रति हो मधुसत्तमा।

वेदकालीन ऋषियों की वाणी का सरस सुबोध रूपान्तर। वेदों की रसवत्ता और काव्याभिव्यक्ति का गहन अध्ययन और सरल भाषा प्रस्तुत करने का प्रामाणिक प्रयास।

होता है कैसे रचना का जन्म : सम्पादक : डॉ० इन्दु जोशी

रचनाकार रचना को कैसे जन्म देता है, उसकी प्रेरणा क्या है, परिवेश क्या है, विचार क्या है, दृष्टि क्या है आदि विषयों पर तेरह हिन्दी लेखकों से किये गये प्रश्नों के उत्तर। यह अपने विषय की पहली पुस्तक। किसी रचना और रचनाकार के अंतरंग को जानने का मौलिक प्रयास।

स्त्री गाथा : सम्पादक : माला वैद, मूल्य : 200.00

और तभी मनुष्य है ऐसा सोचना और समझना क्या स्त्री के लिए कभी प्रश्न बना, इस प्रश्न के सन्दर्भ में स्त्री गाथा के रूप में प्रस्तुत विचार यात्रा। 14 प्रमुख स्त्री लेखिकाओं, समाजसेवियों के समक्ष 16 प्रश्न प्रस्तुत किये गये। स्त्री होने की पीड़ा झेलती, संघर्षरत महिलाओं की विविध समस्याओं का समाधान स्त्री गाथा एक मौलिक प्रयास है। नारी की संवेदना में आज करुणा ही नहीं साहस भी है। सभी स्त्री-पुरुष को इसे पढ़कर समाज को नई दिशा प्रदान करने के बारे में सोचना चाहिए।

निराला, नागार्जुन और छविनाथ मिश्र शैली वैज्ञानिक अध्ययन : डॉ० शम्भु प्रसाद, मूल्य 150.00

निराला की काव्यभाषा एवं भाषिक संवेदना का शैलीगत विश्लेषण। नागार्जुन की काव्यभाषा एवं काव्यशिल्प का शैली तात्विक विश्लेषण। छविनाथ मिश्र की काव्यभाषा के शिल्प विधान का शैली विज्ञान की दृष्टि से विश्लेषण। किसी भी कवि की रचनाओं के सन्दर्भ में भाषाशास्त्र की दृष्टि से इतना गहन और सूक्ष्म अध्ययन नहीं किया गया, यह स्तुत्य प्रयास है। भाषा विषान के अध्येताओं को काव्य के सन्दर्भ में भाषाशास्त्र के व्यावहारिक अध्ययन के लिए एक महत्त्वपूर्ण कृति।

एक था राजा एक थी रानी : श्याम सिंह घुना, नरवदार्जन प्रकाशन, द्वारा केहर कुन्ज, इंजन घर, संजौली, शिमला-171006 (हिमाचल प्रदेश), मूल्य : 100.00

पत्रिका

इंडिया न्यूज (साप्ताहिक) : सम्पादक : सुधीर सक्सेना, 276, कैपटन गौड़ मार्ग, श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली-110065

पहला अंक 18 मई 2007 जंगे-आजादी पर केन्द्रित।

मसि कागद (त्रैमासिक) : सम्पादक : श्याम सखा 'श्याम' तथा अन्य, पलाश, 12 विकासनगर, रोहतक

किसान चेतना और प्रेमचंद का साहित्य, राधेगोविन्द शाही, लोकायत प्रकाशन, एच-2/3 नरिया, बीएचयू, वाराणसी-05, मूल्य : 200.00

प्रेमचंद के कथा-जगत में अनेक विषयों का समावेश है। किन्तु उनके मूल में किसान चेतना ही रही है। कभी भारतीय किसानों की हालत के बारे में इतिहास लिखा जाएगा तो निश्चय ही प्राथमिक स्रोत के रूप में प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यास ही आधार होंगे। श्री शाही ने किसान चेतना और प्रेमचंद के साहित्य के अन्तर्सम्बन्धों पर निष्पक्ष दृष्टि रखी है साथ ही साथ अपनी मौलिक सूझ-बूझ से आरेखित किया है। यह पुस्तक प्रेमचंद के अध्येताओं को उनकी किसान चेतना के नये आयामों से परिचय करायेगी।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 8 **जुलाई 2007** **अंक : 7**

प्रधान संपादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)